Chapter-2

अध्याय :२ :

हिन्दी में ललित निबंधों का उद्भव और विकास-एक विहंगावलोकन

भारत में राष्ट्रीय जागरण के साथ-साथ हिन्दी गद्य साहित्य का भी जन्म हुआ । अथवा यों कहें कि हिन्दी का गद्य-साहित्य देश की राष्ट्रीय चेतना का फल है । भारतेन्दुकाल तक राष्ट्रीयता की भावना ने अपना तीव्ररूप धारण कर लिया था । राष्ट्रीय जीवन की यह चेतना गद्य साहित्य के निर्माण और विकास के अनुकूल ही रही । इस चेतना एवं अनुकूल परिस्थितियों के आग्रह से जीवनीशक्ति प्राप्त कर हमारे नवजात गद्य साहित्य ने जागरण का प्रसार किया । साथ ही भारतीय संस्कृति को युगानुरूप गति देकर अपना भी विकास किया । जीवन की सभी संकीर्णताओं के विरुद्ध समानता, न्याय, सत्य और स्वतंत्रता को प्रश्रय एवं साहित्यिक अभिव्यक्ति देकर ही गद्य साहित्य ने पोषणतत्व प्राप्त किये । इस राष्ट्रीय जागरण से ही सांस्कृतिक जागरण भी प्रारंभ हुआ और कला, संस्कृति तथा साहित्य के - निर्माण की धारा आगे बढ़ी । गद्य के स्वरूप के प्रादुर्भाव का कारण राष्ट्रीय - उद्बोधन ही रहा । देश के बुद्धिजीवी वर्ग के लिए यह एक बहुत बड़ा दायित्व था । सौभाग्यवश उस समय भारतेन्दु एवं उनके मंडल का जन्म हो चुका था । भारतेन्दु बाबू के समय तक गद्य के नाम पर एकाध इनीगिनी पुस्तकें मात्र थी । भारतेन्दु जी को जहां गद्य में सप्राणता लाने का श्रेय प्राप्त है वहीं उन्हें सही निबंधों के श्री गणेश का भी श्रेय प्राप्त है । इतना ही नहीं भारतेन्दु जी के पूर्व तक जो भी लिखा जाता रहा है वह उस कोटि का नहीं था ।

प्रारंभ में गद्य कथात्मक ही रहा । लेखक पाठकों की रुचि से ठीक प्रकार से परिचित भी नहीं हो पाते थे । धीरे-धीरे पत्र-पत्रिकाओं की सुविधा उपलब्ध होने पर एक दूसरे के विचार उनमें छपने लगे । लेखक सभी लोगों की रुचियों से परिचित होने लगे । लेखकों यह ज्ञान हुआ कि आज के युग में पाठकों का मन बढ़ी हुई ह कहानियों द्वारा नहीं भरा जा सकता, उन्हें ठोस वस्तु मिलनी चाहिए । अतः उसके लिए कैसा वातावरण तथा कैसी विचारसामग्री होनी चाहिए और कैसे वस्तु आकर्षक हो सकें आदि

के लिए प्रयास लेखकों के द्वारा प्रारंभ हुए । संक्षेप में भारतेन्दुयुग हिंदी गद्य की जागृति का युग था । पटियाला दरबार के श्री रामप्रसाद निरंजनी ने १७४१ ई० में `भाषायोग वाशिष्ठ्य` की सर्जना की । यही खड़ी बोली हिन्दी गद्य का प्रथम गौरव ग्रंथ रहा । इस तरह १९ वीं सदी के पूर्वार्द्ध में हिन्दी गद्य की सुदृढ़ नींव पड़ी । भारतेन्दु मंडल पर साहित्य सर्जन के साथ-साथ जन-जन तक उसे प्रचारित करने का गुरुतर दायित्व भी आ पड़ा । उस समय एक लेखक मंडल तैयार हुआ- जिनके सुगठित, सुंदर,उपयोगी, दैनंदिन विचार उस समय की पत्र-पत्रिकाओं में नियमितरूप से प्रकाशित होने लगे । उन्होंने उन निबंधों में अपनी आत्मानुभूतियों, भावों-विचारों को सरल सहज भाषा में प्रस्तुत कर पाठकों को वास्तविकता से परिचय कराया । इस नए स्वरूप को पाठकों ने स्वीकार किया । हिन्दी गद्य के ~~इस-प्रकार~~ इसप्रसार युग में समाचारपत्रों का बड़ा योग रहा । उससे हिंदी का नवीन स्वरूप तो जनजनतक पहुंचा ही जनजागरण भी हुआ। जागरण के इस संदेश को वहन करने की क्षमता पत्र-पत्रिकाओं में ही रही । अत: प्राय: सभी लेखक पत्रकार भी बने और निज की शक्ति से पत्रिकाओं को जन्म भी दिए कारण वह युग ही ऐसा था कि प्यास के हर क्षण पर नए कुंए खोदने पड़ते थे । १८२६ ई० में कलकत्ते में `उदडमार्तन्ड` के जन्म के साथ हिन्दी पत्रकारिता का जन्म हुआ परंतु कुछ बाधाओं के कारण १८२७ ई० में ही यह बन्द हो गया । फिर १८२९ ई० में राजाराममोहनराय की प्रेरणा से `बंगदूत` का प्रकाशन प्रारंभ हुआ । काशी में भी राजा-शिवप्रसाद सितारेहिंद की देखरेख में `बनारस अखबार` १८४४ ई० में निकला । इसी प्रकार १८५० में तारामोहन मित्र ने `सुधाकर` निकाला । क्रमश: १८५२ ई० में श्री सदासुखलाल के द्वारा `प्रजाहितैषी` एवं १८६२ ई० में ईसाइयों ने आगरे से `लोकमित्र` निकाला ।

गद्य के पूर्व पूरा साहित्य पद्यमय था । परन्तु इस युग(भारतेन्दुयुग) तक आते-आते परिस्थितियों में ऐसा परिवर्तन हुआ कि गद्य के विकसित रूप के साथ निबंधों की प्रमुख रूप से स्थापना हुई । यद्यपि इसके लिए हमें अंग्रेजी साहित्य का प्रभाव भी स्वीकार करना होगा। अंग्रेजी निबंधों का प्रारंभ १६ वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हुआ । मानतेन

अंग्रेजी निबंधों का ~~प्रारंभ-१६-वीं-शताब्दी-के~~ जनक कहा जाता है, उसने सभी से अप्रभावित रहकर निबंधों में आत्मीय अभिव्यक्ति की है, अपने भाव और विचार ही निबंध में रखे हैं, यही वैयक्तिक विचाराभिव्यक्ति अंग्रेजी में `ऐसे` नाम से स्वीकारी गई। मानतेन नेही सर्वप्रथम `ऐसे` शब्द का प्रयोग किया है। इसके पूर्व `ऐसे` शब्द किसी प्रारंभिक प्रयत्न के लिए प्रयोग में लाया जाता था। बेकन ने यद्यपि `मानतेन` का आधार लिया। पर प्रमुखता विषय को दी। १६ वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में पुन: मानतेन की धारा प्रवाहित हुई- और व्यक्तिवादी निबंधों की रचना जोरों से होने लगी, इन्हें ही ललित निबंध कहा गया। इनमें चार्ल्सलैम्ब, चेस्टर्टन, बेलाक आदि प्रमुख है। बीसवीं शताब्दी में हैराल्ड जे लास्की, एच जी वेल्स, लुकास आदि अधिक प्रसिद्ध हुए, और मानतेन की धारा को प्रशस्त बनाने में योग दिया। सरलता, स्वाभाविकता अकृत्रिमता इनके निबंधों में अधिक मिलती है। अंग्रेजी निबंधों का सिंहावलोकन करने से पता चलता है कि ललित निबंधों के आते-आते विभिन्न प्रकार के प्रयोग किए गए। विभिन्न विषयों को निबंध का माध्यम बनाया गया। मानतेन की विशेषता थी कि वह निबंधों में व्यर्थ के ब्योरे और विवरण देने के बजाय स्वयं की बात कहता था। ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे लेखक प्रत्यक्षरूप से बात कर रहा हो। उसने स्पष्ट लिखा है कि अपने निबंधों का विषय वह स्वयं ही है। जोसेफ कोनराड के शब्दों में मानतेन के निबंधों में -`आह है! किन्तु सिसकी नहीं, स्मित है किन्तु दन्तस्मित नहीं। राबर्ट बर्टन-६१ लुई स्टीवेन्सन (१८५०-१८९५) के निबंधों में मानतेन की झलक मिलती है, राबर्ट बर्टन (१५७७-१६४०) एवं चार्ल्सलैम्ब के मत में स्वानुभूति के प्रकाशन का सर्वोत्तम साधन निबंध है। निबंध आधुनिक चेतना का परिणाम है। प्राचीन काल में अधिकांशत: काव्य ही सभी प्रकार के ज्ञान-विज्ञान तथा कलाशास्त्रों की अभिव्यक्ति का माध्यम था। गद्य का व्यवहार होता था परन्तु वह अत्यन्त क्षीण रूप में था। निबंध अत्यंत परिष्कृत और प्रौढ़ गद्य का प्रतीक है। अत: उस समय निबंध रचना की संभावनाएं नहीं थी। मुद्रण यंत्र का आविष्कार, अंग्रेजी का आगमन, समाचार-पत्रों का प्रकाशन परस्पर वैचारिक

आदान-प्रदान आदि बातों ने गद्य के विकास में पर्याप्त योगदान दिया है ।

गद्य की विभिन्न विधाएं तेजी से विकास पाने लगी । निबंध की रूपरेखा इसी गद्य की काया में व्यक्त हुई । यह भी स्पष्ट है कि उपन्यास, एकांकी, रिपोर्ताज, रेखाचित्र आदि की तरह निबंध की प्रेरणा भी मुख्यत: पाश्चात्य की देन है । आज के अर्थ में निबंध को प्राचीन साहित्य में ढूंढना हठधर्मी ही कहलाएगा । `निबंध` शब्द विशुद्ध भारतीय है और प्राचीन साहित्य में `निबंध` शब्द(संस्कृत साहित्य में) विद्यमान था । इसे मान लेने के बावजूद भी यह मानना पड़ेगा कि आधुनिक निबंध की विधा से वह कहीं पर भी मेल नहीं खाता । परंतु आधुनिक अर्थ में प्रचलित `निबंध` से जो फ्रांसिसी, `ऐसेइस` Essais और अंग्रेजी essay का पर्याय है उसका रंचमात्र भी सम्बंध नहीं था। पहले उल्लेख किया जा चुका है कि फ्रेन्च साहित्यिक न्यायाधीश मानतेन इस विधा के जन्मदाता हैं । निबंध ही एक मात्र ऐसा साहित्य रूप है जिसका गोत्र, नाम, और जन्मतिथि का हमें निश्चयपूर्वक बोध है । नाटक, प्रगीत, लघुकथा, उपन्यास आदिके मूल स्रोत धुंधले अतीत में घुलमिल जाते हैं । ऐसा कोई भी प्रतिभाशाली व्यक्ति विशेष हमारे समक्ष उपस्थित नहीं होता जिसे हम उपर्युक्त साहित्य रूपों में से किसी का आदि जनक तथा आदि प्रवर्तक कह सकें । केवल निबंध ही एक ऐसा साहित्य रूप है जिसके सन् सम्बत का लेखा-जोखा उपलब्ध है । जिसके पूर्व उसका अस्तित्व नहीं पाया जाता और जिसके पश्चात उसका अस्तित्व अविनश्वर रूप में रहता चला आया है । वह तिथि सन् १५७१ के मार्च माह की है, इसी महीने में मानतेन ने भी अपनी गढ़ी के मिनार में बैठकर अपने विषय में ही स्वगत भाषण किये थे । निबंध का प्रथम सूत्र उन स्वगत भाषणों में था । `एस्साई ` शीर्षक से जब वे ही भाषण प्रकाशित हो गए तो विश्वसाहित्य को नयी गद्य विधा मिली । सन् १५८० में निबंध साहित्य की नींव रखी गई । बेकन (१५६१-१६२६) जो अंग्रेजी निबंध साहित्य के अगुआ माने गये हैं वे मानतेन से प्रभावित होने के बावजूद भी स्वतंत्र ढंग से निबंध रचना करने में सफल रहे । इतना ही नहीं हिंदी साहित्य में निबंध के उद्भावक कौन है इस विषय में विभिन्न

मतमतान्तर है । कुछ समीक्षक भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र को हिन्दी निबंध साहित्य का जनक स्वीकार करते हैं तो कुछ विद्वानों ने हिन्दी निबंध रचना का आरंभकर्ता श्री सदासुखलाल को माना है, जबकि अन्य समीक्षकों ने आचार्य रामचन्द्र शुक्ल को आधुनिक हिन्दी निबंध का जन्मदाता स्वीकृत किया है ।

इन विभिन्न मतमतांतरों का परिशीलन करके एक निश्चित धारणा की स्थापना अधिक श्रेयस्कर होगी । साहित्य में अनेक विधाओं का जन्म किसी विशेष समय पर ही होता है । हिंदी गद्य साहित्य में निबंध एक महत्वपूर्ण अंग है इसीलिए उसकी उत्पत्ति का अध्ययन भी परमावश्यक है । अत: निबंधों की परंपरा का सूत्रपात भारतेन्दुयुग से ही मानना उचित होगा । डा० जगन्नाथप्रसाद शर्मा[१], विजयशंकर मल्ल[२], डा० रामरतन भटनागर[३], जयनाथ नलिन[४], प्रा० ब्रह्मदत्तशर्मा[५],आदि विद्वान भारतेन्दु को ही हिन्दी निबंधों का प्रवर्तक मानते हैं । डा० गणपति चन्द्र गुप्त ने `राजा भोज का सपना` को हिंदी का प्रथम निबंध तथा उसके लेखक राजा शिवप्रसाद को हिन्दी का प्रथम निबंधकार माना । ` पर हिन्दी निबंध का व्यवस्थित इतिहास भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के समय से ही आरंभ होता है` यह भी कहा[६]। डा० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय[७], डा० कृष्णलाल[८], धनंजय भट्ट`सरल`[९], डा० धीरेन्द्र वर्मा[१०], बालकृष्ट भट्ट को हिंदी का प्रथम निबंध लेखक स्वीकार करते हैं । शिवनाथ की दृष्टि में सदासुखलाल हिन्दी के प्रथम निबंधकार हैं[११], डा० बलवन्तलक्ष्मण कोतमिरे भी इनकी बात से सहमत हैं ।[१२] श्री इन्द्रपाल सिंह ने हिन्दी साहित्य चिंतन में स्पष्टत: लिखा है कि निबंध साहित्य के श्रीगणेश का श्रेय भी भारतेन्दु जी को प्राप्त है । अतएव हिन्दी निबंधों के जनक वे ही कहे जा सकते हैं ।[१३]

आधुनिक हिन्दी निबंध की जो विशेषतायें हैं- `विषयमधिकृत्य वस्तु निबन्धनम् ।वैयक्तिक दृष्टि से विषयवस्तु प्रधान, संक्षिप्त या सीमित रचना जिसमें वैयक्तिकता की छाप हो- आदि अधिकांश रूप में भारतेन्दुबाबू हरिश्चन्द्र की निबंधमालाओं में ही सर्वप्रथम दृष्टिगोचर होते हैं । पं० बालकृष्ण भट्ट, पं० प्रतापनारायण मिश्र,

पं० राधाचरण गोस्वामी, उपाध्याय बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' इत्यादि निबंध-कारों ने भारतेन्दु जी से ही प्रेरणा ली। आधुनिक हिन्दी भारतेन्दु के समय में ही सच्चे रूप में ढली अत: निबंध का सृजन अथवा उसका सूत्रपात पहले के साहित्यकों तक ले जाना योग्य नहीं माना जाता। निबंध को लोकाभिमुख एवं लोकप्रिय बनाने में सबसे अधिक भारतेन्दु जी ही सफल हुए।

हिन्दी निबंध परंपरा का सूत्रपात भारतेन्दु युग से मानने पर हम इस परंपरा को साधारण तौर पर चार भागों में विभाजित कर सकते हैं :-

भारतेन्दु युग(उद्गम युग) १८७३-१९००
द्विवेदी युग(उत्थान युग) १९००-१९२०
शुक्ल युग (विकास युग) १९२०- १९४७
शुक्लोत्तर युग १९४८ से वर्तमान युग तक)

भारतेन्दु युग :

मौलिक उदात्त व्यक्तित्व वाले पढ़े-लिखे चिंतनशील सरस तथा कर्मठ व्यक्तियों से भरापूरा है। इसीलिए उस युग में निबंध की अपनी निजी छटा दिख पड़ती है। भारतेन्दु युग में निबंधों को नया जीवन, नई जागृति, नई सज्जा मिली। भारतेन्दु ऐसे ही युगप्रवर्तक लेखक थे जिन्होंने साहित्य और समाज में एक विराट आंदोलन खड़ा किया और साहित्य के क्षेत्र में उन्हें अद्वितीय सफलता भी अपने युग में मिली। उन्होंने स्वत: अकेले साहित्य रचना कर समाज के हित का व्रत लेकर मौन रहना स्वीकार नहीं किया- अपितु अपने सदृश आदर्शवाले समाज की चिंता से व्याकुल व्यक्तियों का जो विधा से धनी और प्रतिभासंपन्न थे उनका मेला लगा दिया। उन सबने समाज, साहित्य, संस्कृति को नयी आशा, नया विश्वास अपने अपने ढंग से देने का यत्न किया। इस प्रकार इन्होंने निर्माताओं के इतने बड़े मंडल की रचना की, कि जैसा पहले हिंदी में न तो हुआ और न बाद में ही

हुआ । इस मंडल तथा युग के प्रमुख लोगों में बालकृष्ण भट्ट, दामोदर शास्त्री `सप्रे`, काशीनाथ, रायकृष्णादेवशरण सिंह, लाला श्रीनिवास दास, मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या, कार्तिक प्रसाद खत्री, केशवराम भट्ट, बदरीनारायण चौधरी `प्रेमघन`, ठाकुर जगमोहन सिंह, प्रतापनारायण मिश्र, अंबिकादत्त व्यास, रामकृष्ण वर्मा, महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी, गोस्वामी राधाचरण जी, लाला सीताराम आदि थे ।

भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र एक सफल और सशक्त निबंध लेखक थे । इन्होंने अनेक लेख लिखकर बहुतों को इस ओर प्रोत्साहित भी किया था । `हरिश्चन्द्र चंद्रिका` में हिंदी को वह रूप दिया, जिसके कारण हिंदी नयी चाल में ढली । इन्होंने विविध-पत्र-पत्रिकाओं में विविध प्रकार के निबंध लिखे, उनके निबंधों में अंग्रेज और अंग्रेजीपन तथा अंधविश्वासों और आडंबरों पर तीव्र प्रहार किया गया है । व्यंग्य बड़े तीखे और प्रभावशाली है। इनके कतिपय निबंध विशेष प्रसिद्ध हैं यथा `खुशी`, `होली`, `त्यौहार`, `इंग्लैण्ड और भारतवर्ष`, `हम मूर्तिपूजक हैं`, `यीशु खीष्ट` और `ईशकृष्ण`, `श्रुतिरहस्य`, `एक अपूर्व स्वप्न`, `बंगभाषा की कविता`, `सूर्योदय नाटक`, `ईश्वर का वर्तमान होना`, `भूकम्प` , `मित्रता`, `सूरदास जी का जीवन चरित्र`, `सरयूपार की यात्रा`, `भक्ति ज्ञानादि से क्यों बड़ी है`, `भगवत स्तुति`, `वैष्णव सर्वस्व चरितावली`, महाकवि जयदेव जी का जीवन चरित्र`, आदि और भी अनेक राजनीतिक, धार्मिक, सामयिक और साहित्यिक निबंध लिखे ।

उनके निबंधों का विषय वैविध्य और विनोद की मनोवृत्ति निबंध साहित्य का उज्ज्वल भविष्य निदर्शित करता है । इन उच्च निबंधों में जीवन सम्बंधी जातीय चरित्र, यात्रा-विषयक वर्णन, भावात्मक वर्णन आदि बातें समाहित है । इनमें छोटे छोटे वाक्य विचारपूर्वक लिखे गए हैं । जिन निबंधों में उन्होंने ग्राम साहित्य अथवा लोक-साहित्य की आवश्यकताओं को व्यक्त किया है वे आज भी मैनिफेस्टों के रूप में काम आ सकते हैं । मई १८७९ ई० की `कवि वचन सुधा` में उन्होंने इस विषय की एक विज्ञप्ति प्रकाशित

की थी । भारतेन्दु जी ने निबंध के विविध प्रकारों में प्रयोग उपस्थित किए हैं । इनके इन निबंधों में अध्ययन, निरीक्षण और भावुकवृत्ति का समाहार है । इतना ही नहीं, इनका अध्ययन साहित्यिक, ऐतिहासिक और धार्मिक विषयों से सम्बंधित भी है । संयत और सधी हुई भाषा उन निबंधों में मिलती है । विषय का गंभीरतापूर्वक प्रतिपादन, सरल बोलचाल और विदेशी शब्दों में मिश्रित कुतूहल में ही मनोरंजन की इतिश्री नहीं मगर व्यंग्य के साथ विचारों का गांभीर्य भी है । उन्होंने निरीक्षण सम्बंधी निबंध भी लिखे इसमें जो शब्द जैसा भी उस समय मिला है उसीका प्रयोग किया गया है । 'जातीय संगीत' शीर्षक निबंध में विचारों के प्रसार और शंकाओं के समाधान के लिए इन्होंने ग्रामगीतों की विशेषताओं का आकलन किया है । इस ~~निबन्ध~~ निबंध में भारतेन्दु जी की दूरदर्शिता का पता चलता है, 'एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न', 'स्वर्ग में विचारसभा का अधिवेशन' नामक निबंध मनोरंजक और व्यंग्यपूर्ण तो है ही पर शैली की दृष्टि से सधा हुआ एक ऐसा निबंध है जो एक प्रकार से कहानी का रूप ग्रहण कर लेता है । इनके निबंधों में व्यंग्य या हास्य का पुट ही नहीं वरन् सामाजिक उन्नति की उत्कट इच्छा तथा मौलिक विचार सम्पन्नता भी है जो निबंध कला के विशेष गुण है । वास्तव में भारतेन्दु बाबू के पूर्व किसी भी प्रकार के भावात्मक या विचारात्मक विषयों द्वारा अपनी व्यक्तिगत अनुभूति की अभिव्यंजना करने का, तर्क करने का, या निजी दृष्टि को कार्य रूप देने का प्रयत्न हिन्दी निबंधों में हुआ ही नहीं था ।

यद्यपि भारतेन्दु जी एक विशाल आंदोलन के केन्द्र थे फिर भी वह नेता की पोशाक पहनकर लोगों के सामने नहीं आये । वे दूसरों को एक सहकारी की भांति उत्साहित करते थे और अपना काम हुकुम चलाने तक सीमित न रखकर हर एक के कंधे से कंधा मिलाकर छोटे से छोटा काम करने तक का साहस रखते थे । जीवन का यह व्यक्तिगत स्वरूप एवं उसकी जिंदादिली ही व्यक्ति-व्यंजक निबंधों में प्रकट हुई । क्रीड़ापरक निबंधों की रचना इसी निजी जीवन की हंसी-खुशी से समन्वित थी । समाज सुधार से लेकर स्वदेशी आंदोलन तक उनकी दृष्टि गई थी इतना ही नहीं वे देश की जनता में एक नवीन चेतना जगाना चाहते थे जो प्रत्येक क्षेत्र में उसे सजग रखे । युग की प्रतिमा जनता के निकट अनेक रूपों में

प्रकट हुई । नाटक, सभा-संस्थाओं में भाषण , पत्र-पत्रिकाओं के लेख, आदि के द्वारा लेखक जनता तक अपना संदेश पहुंचा सकें । संक्षेप में इस युग के अधिकांश पत्रों की प्रेरकशक्ति 'काशी' में भारतेन्दु ही थे । उनका सहयोग बहुत से पत्रों से था । 'काशी' में 'बनारस अखबार', और 'सुधारक' पत्रों के बाद 'कवि वचन सुधा' तथा 'हरिश्चन्द्र मैगजीन', भी निकली जिससे नये पत्र-साहित्य को विशेष प्रेरणा मिली ।

इस युग में प्राय: समस्त पत्र को विविध विषयों से एक ही व्यक्ति के निबंधों से भर दिया जाता था । इस युग की साहित्य सृष्टि में निबंधों का विशिष्ट सौन्दर्य है। 'हरिश्चन्द्र चंद्रिका', 'मोहन चंद्रिका', इस युग की मासिक पत्रिकाएं हैं । इनमें विशेषत: भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र और पं० मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या के निबंधों का प्रकाशन है। इनके अलावा जिन अन्य लेखकों के निबंध छपे हैं उनमें मुंशी कमलाप्रसाद, बाबू रामेश्वरीदत्त, पं० बिहारी चौबे, बाबू गोकुलचन्द, बाबू सरयूप्रसाद, बाबू काशीनाथ खत्री थे ।

साप्ताहिक पत्रों में इस युग के निबंध विशेषत: प्रकाशित हुए । वे साप्ताहिक समाचार देते थे । उन पर टिप्पणियां प्रस्तुत करते थे इतना ही नहीं, सामयिक प्रश्नों पर विचार और आलोचनाएं भी छापते थे । 'कवि वचन सुधा' साप्ताहिक पत्रों के अंतर्गत आती है । इसमें जीवन चरित्रों और साप्ताहिक वर्णनों के अतिरिक्त भावात्मक निबंधों तथा व्यंग्य विवेचन भी किया गया है । इतना ही नहीं, इनमें आलोचनात्मक निबंध अधिक छपे ।

निबंध की संज्ञा पाने लायक जो भी रचनाएं भारतेन्दु युग में मिलती हैं उसमें तीन विशेषताएं हैं । सजीवता, रोचकता और आत्मीयता । असल में भारतेन्दुयुग के साहित्यिकों का दायित्व अनेकमुखी था । राष्ट्रीय जागरण का वह जन्मकाल था । राष्ट्र, समाज और साहित्य एक ही साथ इस त्रिवेणी की तरफ से कर्तव्य के तकाजे थे। प्राचीनता की केंचुल छोड़े तो अनेक रूप नवीनता झांक रही थी, उसके अभिनंदन की तैयारी थी, ~~उसके अभिनन्दन~~ गुलामी की रूढ़िवादिता के खिलाफ जनसमुदाय के प्राणों में

चिनगारी जगानी थी । नवनिर्माण के मार्ग की अवरोधक शक्तियों से लोहा लेना था, किन्तु इसके लिए वाणी के जिस शस्त्र का संबल विरासत में मिला था उसमें उपयुक्तता नहीं थी, तेज और ताकत नहीं थी । भाषा में वह ओज, वह शक्ति, वह सम्पन्नता नहीं थी कि वह राष्ट्रीय जागरण का समर्थ वाहन बन सके । अपने अंग उपांगों से साहित्य पुष्ट नहीं था । निर्माण के गुरुतर दायित्व के अतिरिक्त एक और समस्या थी, साहित्य से सर्वसाधारण का सम्बंध जोडने की । जनता साहित्य से उदासीन थी । उन्हें भावादर्शों की पात्रता के अनुकूल सचेत करने की आवश्यकता थी ताकि यह घटना और ज्ञान के उन आवेगों से परिचित हो जो हमारे राष्ट्रीय जीवन को प्रभावित कर रही थी । इस प्रकार तत्कालीन लेखकों पर चौमुखी जिम्मेदारी पड़ी, इसीलिए भारतेन्दु और उनकी पीढ़ी के अधिकांश लेखकों मर- को केवल लिखकर ही छुट्टी नहीं मिली । मगर सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना की जागृति एवं साहित्यिक अभिरुचि पैदा करने के लिए पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ । इतना ही नहीं इस नई चेतना और जनजनमरण जन-साधारण में सम्बंध स्थापित करने का सरल माध्यम निबंध बना । जो पत्रकारिता के बहुत समीप ही नहीं पडता था बल्कि इसी के सहारे पत्रकारिता निखरी । साहित्य के अन्य रूपों की अपेक्षा इस युग में निबंध ज्यादा लिखे भी गए और अच्छे भी उतरे । निबंध का चित्ताकर्षक, मनोरंजन विनोदपूर्ण और स्वच्छन्द जो उत्स उस युग में फूटा था वह आगे संभवित कूलप्लावी प्रवाह न बन सका । इस युग में प्राय: सभी लेखक पत्रकार बने, पत्रिकाओं का जन्म भी हुआ । बालकृष्ण भट्ट, भारतेन्दु युग के प्रतिभाशाली लेखक, संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित, विद्वान तथा युग के सर्वश्रेष्ठ निबंधकार थे । इन्होंने साहित्यिक, नैतिक, मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक, सामाजिक आदि विषयों पर निबंध लिखे । वैयक्तिकता की छाप इनके निबंधों में पूर्णतया पायी जाती है । पं० बालकृष्ण भट्ट, पाश्चात्य निबंधकार ऐडिसन से अधिक प्रभावित थे । वे कर्मठ, अध्यवसायी, पठनशील एवं मेधावी लेखक थे । उग्र राजनीतिक विचारों के कारण ही इन्होंने अध्यापकी छोड़ दी । 'हिन्दी प्रदीप' के प्रकाशन का स्थगन भी इन्हीं कारणों से हुआ । विनोदी और मस्त स्वभाव का प्रभाव इनके निबंधों पर स्पष्ट पड़ा है । वे सरल प्रवाहपूर्ण भाषा में

खरी-खरी सुना देते थे, चाहे किसी को रुचे या न रुचे । हिन्दी निबंध साहित्य में वैयक्तिक कोटि के निबंधों के तो वे प्रवर्तक भी माने जा सकते हैं ।

`आंख`, `कान`, `नाक`, `पैसा`, `नहीं`, `आंसू`, `बातचीत`, `मकुआ कौन कौन`, `इंगलिश पढ़ै सो बाबू होय`, `पुरुष अहेरी की स्त्री अहेर`, `ईश्वर भी क्या ठठोला है` आदि उनके उत्कृष्ट निबंध हैं । उनके निबंध `हिंदी प्रदीप` के आकर्षक उपादान थे । हिंदी प्रदीप` के प्रकाशन के साथ ही सन् १८७७ से इनकी प्रतिभा इस क्षेत्र में प्रतिष्ठित होने लगी और उसी के माध्यम से इनकी निबंध लेखन कला को हिंदी में सम्मान मिला । उनके निबंधों में अधिकारी निरीक्षक की चेतना है । अंग्रेजी के एडीसन और स्टील की भांति गल्प, विडंबना, और उपहास की विधि अपनाने तथा गौण विषयों पर मस्तिष्क की उर्वरता और उक्ति की विदग्धता दिखलाने की भी प्रवृत्ति उनमें है । भट्ट जी ने प्राय: इन्हीं चार विषयों से काम लिया है संपूर्ण निबंध में निर्मित होनेवाले निबंधकार का व्यक्तित्व काकू या ध्वनि से विषय के प्रति व्यंजित होनेवाली उनकी वैयक्तिक भावमुद्रा, विषय के प्रति अनुत्तरदायी संघटन की शिथिलता, या निर्बंधता, विषयांतर का प्रयोग, शैली की वार्तालापीयता आदि इनके निबंधों के अवदान के रूप में है । इन्होंने वर्णनात्मक, विचारात्मक, भावात्मक, व्याख्यानात्मक, संवादात्मक सभी विधा के सफल निबंध प्रस्तुत किए । यद्यपि इनमें चिंतन और गंभीर ज्ञानार्जन का अभाव दीखता है तो भी इनके निबंधों में अध्ययन की व्यापकता का प्रदर्शन होता है ।

वर्णनात्मक या विवरणात्मक निबंधों में इनके यात्रा विवरण, स्वप्नकथा, जीवनी, प्रहसनात्मक, संवादात्मक निबंध हैं, उनके विचारात्मक निबंध थोड़े ही हैं तो भी उनमें ज्ञान और भाव का मार्मिक योग है । भावात्मक निबंध इन्होंने बहुत अधिक लिखे हैं। उनके साहित्यिक निबंध रस और गुण दोनों दृष्टियों से सुंदर, आकर्षक, प्रभावशाली, विदग्ध और व्यक्ति व्यंजक है । उनमें उनके व्यक्तित्व की अमिट छाप है और वे ही

---निबंधकार के रूप में कीर्तिस्तंभ है । भट्ट जी अपने निबंधों का शीर्षक कहीं विषय पर, कहीं भाव पर, कहीं हिन्दी में, कहीं उर्दू में, कहीं अंग्रेजी में और कहीं- कहीं लोकोक्ति एवं मुहावरे में लगाते नजर आते हैं ।

जहां तक शैली का सम्बंध है वे न तो शुद्ध संस्कृतवादी थे और न अतिशय मध्यमार्गी । वे ऐसी विचारधारा के निबंधकार थे जो अपनी बात लोगों तक पहुंचाना चाहते थे । जहां तक शब्दचयन का प्रश्न है ठेठ बोलचाल के शब्द, संस्कृत के शब्द, फारसी और अंग्रेजी के शब्द उनके गद्य में व्यापक रूप से प्रयुक्त हुए हैं । अंग्रेजी के शब्दों को उन्होंने हिंदी पर्याय के रूप में दिया है । कहीं- कहीं देवनागरी लिपि में और कभी केवल रोमन में ही शब्द दिए हैं । उनके निबंधों में व्यंग्य और विनोद प्रचुर मात्रा में निर्वैयक्तिक ढंग से हैं जो वस्तुभाव और विषयगत है । इस कारण इनके निबंधों में जीवनीशक्ति है इसीलिए इनके व्यक्तित्व की छाप भी इन पर है ।

प्रतापनारायण मिश्र हिन्दी निबंध साहित्य के उन्नयन में अपना मौलिक महत्व रखते हैं । निबंधकार के रूप में मिश्र जी की प्रतिभा का प्रकाश १८८३ ई० से फैलना प्रारंभ हुआ । उन्होंने `ब्राह्मण` पत्र निकाला और उसी के माध्यम से उनके निबंध प्रकाशित होते रहे । एक प्रौढ़ कवि एवं अच्छे नाटककार होते हुए भी उनके निबंधों में उनकी अपनी शान है । साहित्य क्षेत्र में वे विशेष उद्देश्य लेकर अवतरित हुए थे । भट्ट जी और मिश्र जी दोनों ही हिंदी में व्यक्तिव्यंजक निबंधों के जनक कहे जा सकते हैं। `ब्राह्मण` के शब्दों में `हिंदी प्रदीप` इसका श्रेष्ठ सहयोगी है । मिश्र जी ने सर्वसाधारण विषयों को अपनी प्रतिभा के बल पर रोचक ढंग से प्रस्तुत किया । इतना ही नहीं वे परम मनमौजी, स्वतंत्र स्वभाव के थे । जन-साधारण के साधारण विषयों तक पर उन्होंने अपनी लेखनी उठाई है । जहां एक ओर `नारी`, `न्याय`, `धरती`, `माता`, `स्वार्थ`, `ममता`, `सत्य`, `अपभ्रंश`, `स्वतंत्रता`, `विश्वास`, `चिंता`, `आप`, `धोखा`, `शैव सर्वस्व`, `मनोयोग`, `आत्मगौरव`, `अशुद्धि` आदि गंभीर विषयों पर निबंध लिखे हैं।

साथ ही देश की उन्नति, कांग्रेस, भारतवर्ष, महामंडल, मतमतांतर प्रतिपादन, उद्योग आदि विषयों को भी उन्होंने छोड़ा नहीं है । उनके निबंधों को पांच वर्गों में विभाजित किया जा सकता है- वर्णनात्मक, विचारात्मक, भावात्मक, हास्य और व्यंग्यात्मक तथा अन्य निबंध । इनके निबंधों का संग्रह `प्रतापनारायण ग्रंथावली` नाम से प्रकाशित हुआ है ।

वर्णनात्मक निबंधों में निबंधकार का उद्देश्य वर्ण्य विषय से पाठक का परिचय कराना है । इस परिचय को जीवंत तथा ग्राह्य बनाने के लिए रोचकता और सहृदयता की आवश्यकता होती है। ये ज्ञान के प्रसार के लिए लिखे जाते हैं । इसके साथ साहित्यिक विषयों पर भी वर्णनात्मक निबंध लिखे हैं । जैसे `अपभ्रंश एक सलाह`, `पौराणिक गूढ़ार्थ` आदि । इस प्रकार सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक, तथा जीवनी साहित्य को इन्होंने वर्णनात्मक निबंधों का विषय बनाया है । इन निबंधों में उनका उपदेशक और समाज सुधारक रूप प्रखर रूप से रहा है । वे अंग्रेजीयत और अंग्रेजी के विरोधी तथा प्रगतिशील सनातनी थे । वे रुढ़ि के विरोधी किंतु परंपरा में आस्था रखनेवाले स्वदेशी और देशी के भक्त थे । आदर्शों के धनी और धुन के पक्के मिश्र जी प्राय: अपने निबंधों को सजीव एवं प्रभावात्मक तथा स्वाभाविक ढंग से लिखते थे । उनके विचारात्मक निबंधों में बुद्धि और विवेक की परीक्षा होती है । इस प्रकार के निबंध के लिए अध्ययन, अनुभव, चिंतन की व्यापक अपेक्षा होती है । कल्पना और भावुकता का विशेष स्थान नहीं होता । उनके धार्मिक एवं साहित्यिक विषयों के निबंध के अंतर्गत- `हिम्मत रखो`, `एक दिन नागरी का प्रचार होगा ही`, `मतवालों की समझ आकाशवाणी`, `प्रश्नोत्तर` आदि हैं । उनके भावात्मक निबंध कई प्रकार के हैं । उनकी शैली को देखें तो विचारात्मक निबंध में व्यास, तरंग, उद्धरण, समास, तर्क तथा अलंकार आदि हैं । यद्यपि व्यास शैली की उनमें प्रधानता है तो भी अन्य शैलियों का प्रयोग यथास्थान हुआ है । भावात्मक निबंधों में तरंग और प्रलाप शैली के दर्शन होते हैं । मनोवृत्तियों और मनोविकारों पर लिखे गए निबंधों में समास शैली का प्रयोग किया गया है । सर्वोत्तम शैली वह है -जिसमें

हास्य, व्यंग्य, दृष्टांत और मुहावरे अकृत्रिम रूप से आते हैं और लेखक, पाठक के बीच की दूरी समाप्ति हो जाती है। शैली की दृष्टि से जिन निबंध लेखकों ने हिंदी सन निबंध साहित्य को मौलिक शैली दी इनमें पं० बदरीनारायण चौधरी `प्रेमघन जी` विशेष महत्व रखते हैं। भारतेन्दु युग के प्रमुख साहित्य सेवियों में से प्रेमघन जी थे। जीवन से लेकर प्रकृति तक के अभिजात तत्वों में उन्होंने अपने पत्रों, `आनंदकामिनी`, और `नागरी-नीरद` के माध्यम से अपने आदर्श को जीवित किया। प्रकृति का प्रेमी भारतेन्दुगीन निबंधकारों में शायद ही कोई हुआ। इनका वाक्य विन्यास लंबे समस्त पदों से बनता था। जिनमें संस्कृत के ततसम शब्दों का व्यापक प्रयोग मिलता है। उनके निबंधों में देश और समाज की अभिव्यक्ति भी हुई है। वे एक ऐसे ललित निबंधकार थे जिन्होंने भावनात्मक और विचारात्मक दोनों प्रकार के निबंध प्रस्तुत किए। उनकी महिमा भावनात्मक निबंधों को लेकर ही है जिनमें उनके व्यक्तित्व की सुस्पष्ट छाया मिलती है। वे अलंकार शैली के प्रकांड पंडित थे तथा शब्द चयन पर इनकी विशेष दृष्टि रहती थी। इनके निबंधों में एक ओर उर्दू के शब्दों का प्रयोग मिलता है तो दूसरी ओर क्लिष्ट संस्कृत शब्दों की भरमार। कहीं- कहीं सुन्दर मुहाविरों का प्रयोग भी हुआ है। `बावन तोले पाव रत्ती`, `हाथ धो बैठना`, `लोहे के चने चबाना आदि। इनके निबंधों में काव्यात्मकता का सन्निवेश रहता है।

प्रेमघन जी ने विचारात्मक, आलोचनात्मक, भावात्मक तथा वर्णनात्मक निबंध लिखे। भारतेन्दुयुग में विचारात्मक निबंधों का श्रीगणेश पं० बदरीनारायण उपाध्याय `प्रेमघन` द्वारा हुआ। उन्होंने कभी-कभी आलोचनात्मक लेख भी लिखे। उनके वैयक्तिक निबंधों में हम उनके `बनारस का बुढ़वा मंगल`, `दिल्ली दरबार में मित्र-मंडली के यार` आदि निःसंकोच रख सकते हैं। `प्रेमघन सर्वस्व` (द्वितीय भाग) की भूमिका में श्री प्रभाकरेश्वर उपाध्याय ने लिखा है कि - इन व्यक्तिगत निबंधों से परिचित हो जाने पर हमें यह कहने में संकोच न होना चाहिए कि जिस प्रकार अंग्रेजी साहित्य में मोन्टेन निबंध लेखन कला का जन्मदाता माना जाता है उसी प्रकार प्रेमघन जी भी हिन्दी के

मौन्टेन कहे जा सकते हैं ।[१४] चौधरी पं० बदरीनारायण उपाध्याय ने हिन्दी में विचारात्मक, आलोचनात्मक तथा वैयक्तिक निबंधों का सूत्रपात किया । वे कांग्रेस की नीति के भक्त थे । `नैशनल कांग्रेस की दुर्दशा` नामक निबंध में सूरत कांग्रेस में नेताओं के आपसी झगड़े का आलोचनात्मक दृष्टि से विवेचन किया है । इनकी रुचि सामयिक, राजनीतिक, तथा सामाजिक परिस्थितियों की ओर विशेष रही । इनका प्रसिद्ध लघु निबंध `समय`- जिसका आरंभ संस्कृतश्लोक उद्धृत करके किया है । इनकी शैली में एक अद्भुत लोच तथा वाक्य रचना भी असाधारण संस्कृत परिपाटी की है ।

आचार्य शुक्ल जी ने इनके बारे में ठीक ही कहा है कि प्रेमघन जी की शैली सबसे विलक्षण थी । वे गद्य रचना को एक कला के रूप में ग्रहण करनेवाले, कलम की कारीगरी समझनेवाले लेखक थे । और कभी-कभी ऐसे पेचीदे मजमून बांधते थे कि पाठक एक-एक डेढ़-डेढ़ कलम के लम्बे वाक्य में उलझा रह जाता था । अनुप्रास का उन्हें बड़ा मोह था । संक्षेप में `प्रेमघन` भाषा प्रयोग में समयानुकुलता के समर्थक थे । जिसमें अन्यत्र सम्बंधित भाषाओं के प्रचलित शब्दों की नियोजना भी हो सके । पंडित राधाचरण गोस्वामी ने भारतेन्दुबाबू हरिश्चन्द्र की रचनाओं से प्रभावित होकर निबंध रचना आरंभ की । वे नाटककार तथा उपन्यासकार के अतिरिक्त अच्छे निबंधकार भी थे । इतना ही नहीं निबंध के क्षेत्र में वे भारतेन्दु जी के अनुयायी थे । उनमें देशभक्ति और समाज सुधार की भावना कूट-कूटकर भरी थी । `भारतेन्दु` नामक मासिक पत्रिका भी इन्होंने वृन्दावन से निकाली । वे अपने निबंध प्राय: `भारतेंदु` में प्रकाशित करते थे । इसके अतिरिक्त उनके कुछ निबंध जैसे-`कानपुर`,`अलवर गमन`,`गोरक्षा` आदि `सार सुधा निधि` पत्रिका में निकले थे । उनके निबंध प्राय: विवरणात्मक शैली में लिखे गए `आर्य शब्द`, `तुम्हें क्या`,`होली`, `यमपुर की यात्रा`, आदि प्रमुख हैं । `पूर्णिमा का चंद्रोदय`, इनका गद्य शैली में लिखा गया निबंध है । `रेलवे स्तोत्र` भारतेन्दु जी के कंकड स्त्रोत की शैली में लिखा गया है । जिसमें रेलवे कर्मचारियों की आलोचना की गई है । उनका `यमलोक की यात्रा` स्वप्न शैली में लिखा गया है । इसमें हास्य-व्यंग्य का अच्छा

पुट मिलता है । मुक्तिफौज, महाभारत योग, हमारी सरकार का भ्रम, जोड़ा आदि छोटी-छोटी टिप्पणियां हैं । जो वैविध्य लिए हुए हैं । ये सभी सामयिक समस्याओं से सम्बंध रखने के कारण सार्थक भी हैं। मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या भी भारतेन्दु के समान हिंदी के विकास और प्रसार में लगे । इन्होंने `मोहनचंद्रिका` नामक पत्रिका का प्रकाशन किया । इसमें मुख्यत: उनकी रचनाएं रहती थी । इनके निबंध सामाजिक घटनाओं पर आधारित रहते थे इसके अतिरिक्त नैतिक अथवा उपदेशात्मक निबंध भी लिखे । `खुशामद`, हम लोगों की बुद्धि किस रीति से हो`? ,`बन्धुत्व किसे कहते हैं ?`,`जीवन की आशा`, आदि इनके प्रधान निबंध हैं ।`वर्षा की बहार` वर्णनात्मक निबंध है । इनकी विशेष रुचि ज्यादातर भौगोलिक विवरणों को प्रस्तुत करने में रही । इनके वर्णनात्मक निबंध में सफल निबंधकार की प्रवृत्ति नहीं, बल्कि वर्णन और शोध की दृष्टि है और वह भी उथली, इनमें विषय से सम्बंध दृष्टि विस्तार है । उनकी शैली में संयम है, पर निखार नहीं, वे भारतेन्दु जी की शैली के अनुगामी हैं । धार्मिक प्रवृत्ति के कारण श्रद्धावान अधिक हैं । इन्होंने इन्हीं दोनों भावों की रक्षा करते हुए विविध विषयों पर छोटे-छोटे निबंध ही लिखे । सामयिक घटनाओं से प्रभावित होकर निबंध लिखे जिनका उल्लेख व्यंग्यात्मक तथा विनोदमयी शैली में ही किया गया ।

बालमुकुन्द गुप्त :

निबंध लिखने के क्षेत्र में अपने ढंग के अकेले थे । वे उर्दू के मर्मज्ञ थे और हिंदी के परिष्कर्ता । मुहाविरों के प्रयोग की कला में गुप्त जी निपुण थे । देशभक्ति और हिंदी प्रेम उनके चरित्र की प्रमुख विशेषताएं थी । वे स्वभाव से सरल, धुन के पक्के, हास्य और व्यंग्य के अवतार थे । स्पष्टवक्ता, निर्भीक साहसी, विशुद्ध वैष्णव, विद्वान एवं प्रतिभाशाली गुप्त जी अपने निबंधों में अलग- अलग रूप में दिखायी देते हैं ।

उनका निबंध साहित्य `गुप्त निबंधावली` भाग-१ ,`शिवशम्भू के चिट्ठे`, `चिट्ठे और खत` नामक ग्रंथों में संग्रहीत हैं।`हिन्दोस्थान`,`हिन्दी बंगवासी` और

'भारत मित्र' आदि पत्र-पत्रिकाओं में भी गुप्त जी ने विपुल लेखन किया । उनके ~~राज~~-राजनीतिक निबंधों में उनका उग्रतावादी रूप दिखाई देता है । इन निबंधों में उनका व्यंग्य अत्यन्त कठोर और तिलमिला देनेवाला है । ~~धर्म~~ धार्मिक निबंधों के क्षेत्र में वे सनातनी, प्राचीन आचार-विचारों के समर्थक तथा कुछ हद तक कर्मठ नजर आते हैं । सामाजिक क्षेत्र में उनकी विचार परंपरा को अनुदार कहा जाएगा एवं आलोचना क्षेत्र में वे आक्रमक वृत्ति के रहे हैं । वैचारिक दृष्टि से उनके व्यक्तित्व के ये पहलू उनके निबंध साहित्य में भी उजागर हैं । गुप्त जी के व्यक्तित्व में भावप्रवणता अधिक थी । उनके अधिकांश निबंधों में शायद इसीलिए वैचारिक गंभीरता का कम, तरल,भावुकता अधिक दिखायी देती है । उनकी भाषा भारतेन्दु जी की भाषा की अनुगामिनी थी । छोटे-छोटे वाक्य, कहावतों से युक्त चलती हुई भाषा, सुस्पष्ट विचार, तार्किक प्रतिपादन, व्यंग्य और विनोद का प्रयोग, उचित शब्दचयन आदि उनकी मुख्य विशेषताएं थी। मार्मिकता, सहजता एवं प्रभाव सम्पन्नता, युगीन अन्य निबंधकारों की अपेक्षा उनकी भाषा में अधिक थी । इनके निबंधों में चलते-फिरते मुहावरों का बेलाग प्रयोग हुआ । हृदय एवं बुद्धि दोनों को विटामिन इनकी रचनाओं में प्राप्त है । वे उन लोगों में थे जिन्होंने अपने जीवन को हिन्दी की सेवा में खपा दिया । गुप्त जी अपनी अत्यन्त परिनिष्ठित एवं प्राणवान भाषाशैली के कारण युगीन निबंधकारों में भी अपना अलग स्थान बना सके । ठाकुर मोहन सिंह के निबंधों में ग्राम्य प्रवृत्ति की सुषमा तथा मानव सौंदर्य का सुन्दर चित्रण हुआ है । इन्होंने प्राय: वर्णनात्मक निबंध ही लिखे हैं जिनमें इनकी भावुकता सर्वप्रधान हो गई है । इन्होंने संस्कृत और अंग्रेजी का अच्छा अध्ययन किया था ।

इनके वर्णनात्मक निबंधों की ~~स~~ सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इन्होंने संश्लिष्ट योजना द्वारा प्रकृति का बिम्ब ग्रहण कराया है । इनके निबंध वर्णनात्मक हैं पर भावात्मक निबंधों की विशेषताओं से वे युक्त भी हैं । इनका 'श्यामा स्वप्न' निबंध प्रकृति की सुंदरता का अच्छा निरूपण करता है । प्रकृति सम्बंधी निबंध लिखने में

ठाकुर जी सिद्धहस्त थे। ठाकुर साहब के कवितापूर्ण वर्णनात्मक निबंध प्रेम और प्रकृति की प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति कर सके हैं। लाला श्रीनिवासदास ने सन् १८७४ में `सदा-दर्श` नामक पत्र निकाला था। उसमें भूमिका के रूप में इन्होंने निबंधों की रचना की है। लाला श्रीनिवासदास जी के निबंधों को देखने से विदित होता है कि वे बहुपुट व्यक्ति थे। इनके निबंध सोद्देश्य होते थे। भावात्मकता का पुट कहीं- कहीं अवश्य प्रबल हो गया है। इनका `भरतखंड की समृद्धि` शीर्षक निबंध बड़ा प्रभावशाली है। बाबू काशीनाथ खत्री ने सदाचार और देशहित सम्बंधी अनेक लेख लिखे हैं। इन्होंने आलोचनात्मक निबंध भी लिखे हैं। ये आलोचनाएं प्राय: किसी न किसी पुस्तक पर लिखी गईं। इनके निबंधों में `गो गुहार`, `गोरक्षा प्रबंध`, मन की शुद्धि`, खेती के विचार में मूल सिद्धांत`, बालविवाह की कुरीति आदि मुख्य हैं। पं० महादेव दुबे ने सामयिक और धार्मिक विषयों पर निबंध लिखे। शुभाचरण की बड़ाई`, `ब्राह्मण` आदि इनके निबंध प्राय: `मित्र विलास` में प्रकाशित थे। इनकी शैली में तत्समता तो प्रधान है ही, वाक्य भी लम्बे और जटिल हैं; तथा उपवाक्यों से गर्भित भी। श्री मुरलीधर पाठक `मित्रविलास` परिवार के प्रसिद्ध निबंधकार हैं। ज्योतिष, धर्मशास्त्र आदि पर भी इनका अच्छा अधिकार था। इनके प्रधान निबंध हैं- `हिन्दी और उर्दू`, `भारत वर्षीय हिन्दू मात्र का शुभ कर्तव्य`, और `बुद्धि का प्रयत्न`। `ज्योतिष` शीर्षक निबंध सुंदर व्यंग्यात्मक शैली में लिखा गया है। पं० हरिमुकुन्द शर्मा के निबंध सामाजिक विषयों, शरीर विज्ञान, धर्म आदि पर आधारित थे। शैली में भाषणकला का ओज स्थान-स्थान पर मिलता है। `देश भाइयों से प्रार्थना`, अंग्रेजों की बुद्धि आदि निबंध `मित्र विलास` में प्रकाशित हैं। इनके विषय बहुधा हिन्दी भाषा और हिन्दुत्व से सम्बंधित हैं। पं० गणेशदत्त शर्मा धार्मिक विषयों पर ही लिखते रहे हैं। इनका लक्ष्य धार्मिक विचारों की आलोचना करना तथा सनातन धर्म की प्रतिष्ठा बढ़ाना है। `धर्म सिद्धान्त`, `मृत्यु क्या है`, आदि `मित्र विलास` में निकले हैं। निबंधों में सामाजिक उत्तेजना अधिक है पं० भानुदत्त ने `हिन्दुओं से निवेदन`, `जातीय धन भंडार` आदि निबंध `मित्रविलास`

UNIVERSITY * Smt. HANSA MEHTA
P/Th
4833

में लिखे हैं । इनमें भारत के दरिद्र विद्यार्थियों को विविध काम सिखाने के लिए सहायता दी जाने पर बल दिया गया है । पं० गोविन्दराम 'प्रभाकर', काशीनाथ के नाटक, 'विलायतगमन पर विचार' विचारात्मक निबंध हैं । विलायतगमन पर सामाजिक - समृद्धि तथा धर्म की दृष्टि से विचार किया गया है । प्राचीन अर्वाचीन उदाहरणों द्वारा इसे निर्दोष बताया गया है । हरिश्चन्द्र उपाध्याय ने वर्णनात्मक निबंध अधिक लिखे । साहित्य हृदय (प्रथम भाग) निबंधों का संग्रह है । इनके सभी निबंध 'स्वान्त: सुखाय' लिखे गये हैं । 'आनंद कादंबिनी' में इनके निबंध निकला करते थे ।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि हिन्दी साहित्य में निबंध के विकास का यह प्रथम चरण है । इस युग में निबंध के सभी प्रकारों की रचना हुई । सभी प्रकार की शैलियां अपनायी गयी । आलोचनात्मक निबंध भारतेन्दु युग ~~की-सबसे~~ का सबसे बड़ा उपहार है । भारतेन्दु युग में निबंध का रूप सुनिश्चित हुआ । बालकृष्ण भट्ट और प्रतापनारायण मिश्र ने निबंध लिखकर हिंदी गद्य को नवीन रूप दिया । इतना ही नहीं-निबंध रचना का स्वाच्छ और परिष्कृत रूप भट्ट जी तथा मिश्र जी ने उपस्थित किया । जितनी सिद्धि भारतेन्दु युग में निबंध साहित्य को मिली उतनी साहित्य की अन्य विधाओं को नहीं मिल पाई । इस प्रकार निबंध अपनी लघु यात्रा करके भारतेन्दु युग से द्विवेदी युग के द्वार पर पहुंच गया ।

द्विवेदी युग :

सन् १९०० में 'सरस्वती' के प्रकाशन के साथ ही हिन्दी साहित्य में निबंध के विकास का द्वितीय चरण आरंभ होता है । इस युग के आरंभकर्ता पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी जी थे । हिन्दी निबंध साहित्य में द्विवेदी जी के प्रवेश से ही एक नया परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है । द्विवेदी युग के साहित्य की प्रधान चेष्टा संस्कार और रुचि का परिमार्जन करना तथा हिंदी के भंडार को भरपूर बनाने की थी । सन् १९०३ में द्विवेदी जी

ने 'सरस्वती' का संपादक पद ग्रहण किया। भाषा का परिष्कार हुआ। व्याकरण सम्मत नियम निर्धारित कर शब्दावली का प्रयोग होने लगा। मस्तिष्क को प्रधानता दी गई, और हृदय को गौण माना जाने लगा। लेखकों ने अपने विचार इन निबंधों के माध्यम से प्रदर्शित किए अर्थात् उस युग में परिपक्व विचारों को निबंधों के माध्यम से प्रकट किया जाने लगा। इन निबंधों की भाषा समृद्ध थी और उसमें नवीन विचार-व्यंजक शब्दावली का प्रयोग किया जाता था। विभिन्न प्रकार के निबंध इस युग में लिखे गए, इनमें से विचारात्मक और भावात्मक निबंधों को प्राथमिकता दी गई। उस युग के निबंध नैतिकता प्रिय होने के कारण तथा स्वच्छन्दता के अंकुश के कारण जन-साधारण की वस्तु न रहकर शिष्ट बौद्धिक, समाज तक ही सीमित थे। इसमें भाषा को संवारकर आदर्श बनाया जाने लगा। इसीलिए इनमें बौद्धिकता की अधिकता एवं हार्दिकता भी खटकने लगी। इनके निबंधों का प्रयोजन केवल मनोविनोद तथा चमत्कार प्रदर्शन तक ही सीमित नहीं था किंतु आलोचनात्मक और इसके अतिरिक्त वर्णनात्मक, विवरणात्मक, भाषा साहित्य विषयक आदि प्रकार के निबंध भी लिखे गए। इतना ही नहीं - भारतेन्दु युग से चली आ रही ललित निबंधकारों की परंपरा जिसमें कथा, कल्पना, रोमांस का योग होता है, इस युग में वर्तमान रही। निबंधों में व्यक्तित्व की प्रधानता कम और उपदेश, संस्कार, परिष्कार की बातें अधिक रहती हैं। इनमें तार्किक विवेक और विचार प्रमुख है।

'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से साहित्य भाषा में जितना निखार, परिष्कार द्विवेदी जी ने किया वह अद्वितीय है। इसी के प्रादुर्भाव के कारण भाषा और साहित्य को सही मार्गदर्शन मिला। इस युग के प्रमुख निबंध लेखकों में पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी, गोविंदनारायण मिश्र, माधवप्रसाद मिश्र, चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी', सरदार पूर्णसिंह, जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी आदि आते हैं। पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी अपने युग के सर्वश्रेष्ठ प्रेरणास्रोत थे। उनके विविध विषयों पर लिखे गए निबंधों में से कुछ 'निबन्ध' विचार-विमर्श,

'साहित्य सीकर', 'साहित्य संदर्भ', समालोचना समुच्चय, लेखांजलि', और आलोचनांजलि', नामक पुस्तकों में संगृहीत है। इन्होंने स्थायी महत्व के तथा सामयिक, लाभदायक, तथा गहन, साधारण तथा गंभीर अनेक विषयों पर निबंध लिखे और लेखकों को भी लिखने के लिए प्रोत्साहित किया। इसके अतिरिक्त विचारात्मक, आलोचनात्मक, भावात्मक, वर्णनात्मक तथा विवरणात्मक निबंध भी लिखे। परिचयात्मक समालोचना विषयक निबंधों का द्विवेदी जी ने मार्गदर्शन किया। उनके 'रसज्ञरंजन' निबंध संग्रह में आचार्य द्विवेदी जी के साहित्यिक निबंधों का संकलन हुआ है। इसकी दो कोटियों में पहली कवियों और लेखकों को शिक्षा देने के उद्देश्य से प्रस्तुत की गई है जबकि दूसरी में संस्कृत रचना के विषय का परिचय कराया गया है। इनके और निबंध 'कविकर्तव्य', 'कवि और कविता', 'हंस का नीरक्षीर विवेक', 'जर्मनी में संस्कृत भाषा का अध्ययन-अध्यापन', संस्कृत साहित्य विषयक विदेशियों की ग्रंथ रचना', 'संस्कृत साहित्य का महत्व' आदि निबंध भी उल्लेखनीय हैं। इनके निबंधों का प्रधान गुण सामयिकता है, निबंध रचना के मूल में द्विवेदी जी की एकाधिक विचार दृष्टियां रही हैं। सबसे प्रमुख दृष्टि है - हिंदी के ज्ञान भंडार को समृद्ध करना, इनकी दूसरी रचना दृष्टि प्रचारात्मक थी। ऐसे भी निबंध लिखे जिनमें पाठक के हृदय को प्रभावित करनेवाला ओज है। द्विवेदी जी ने आधुनिक पाश्चात्य वैयक्तिक निबंध नहीं लिखे। पाश्चात्य आधुनिक निबंधकार अपने निबंधों का स्वयं ही केन्द्र होते हैं किन्तु द्विवेदी जी ने अपने को निबंध का केन्द्र नहीं माना। पाठक ही उनके निबंधों का केन्द्र रहे हैं। अपने निबंधों में उन्होंने प्रत्येक वस्तु को उसी के लाभालाभ की दृष्टि से देखा है। इनके निबंधों पर उन्हीं के संपादक, भाषा-सुधारक, और आलोचना इन विविध रूपों का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। द्विवेदी जी शुद्धतावादी नैतिक प्रवृत्ति के स्पष्ट व्यक्ति हैं और इनकी युग चेतना इनके इन निबंधों में व्यक्त हुई है।

द्विवेदी जी के संस्कृत प्रेम तथा उनकी भाषा शैली को देखकर वे नवोत्थानवादी

प्रवृत्तियों के पुरस्कर्ता मालूम होते हैं। इनके निबंधों में संस्कृत साहित्य को गंभीरता, विस्तार, उत्कर्ष, पुष्टता तथा वैविध्य की दृष्टि से अत्यन्त उच्च माना गया है। उन्हीं ने संस्कृत साहित्य में वर्णनात्मक और विवरणात्मक निबंध लिखकर संस्कृत साहित्य और भाषा की ओर अपना अनुराग प्रकट किया। इसके अतिरिक्त उर्दू, फारसी, अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग उन्होंने अपने निबंधों में किए। वे अंग्रेजी शब्दों को मूल रूप में लिखने के पक्ष में नहीं थे, आवश्यकता पड़ जाने पर अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया जाय। उनमें से विदेशीपन निकल जाय और व्याकरण नियमों के अनुसार हों ऐसा मानने के पक्ष में थे। उनकी सरल, अनलंकृत और स्पष्ट शैली ने आनेवाले लेखकों की पीढ़ी की भाषा को एक नया मार्ग बताया था। उनकी गद्य शैली साधारण जनता को आकर्षित करनेवाली थी। उनकी भाषा में कहीं संगीत नहीं है केवल उच्चारण का ओज है, जो भाषणकला से उधार लिया गया है। विषय के स्पष्टीकरण के लिए द्विवेदी जी जो पुनरुक्तियां करते हैं वे कभी- कभी खाली चली जाती है - असर नहीं करती। परंतु वे फिर आती हैं और असर करती हैं। लघुता उनकी विभूति है। वाक्य पर वाक्य आते हैं और विचारों को पुष्ट करते हैं। हिंदी निबंध साहित्य में भावात्मक निबंध का प्रकर्ष अध्यापक सरदार पूर्णसिंह के निबंधों में मिलता है। उन्होंने बहुत थोड़े निबंध लिखे। उनका निबंध 'पवित्रता' विचारात्मक कोटि का है। 'आचरण की सभ्यता', 'मजदूरी और प्रेम', 'सच्ची वीरता', भावात्मक निबंध है। 'ब्रह्मक्रांति' दार्शनिक प्रकार तथा 'अमेरिका का मस्त जोगी वाल्ट व्हिटमैन' कथात्मक प्रकार का निबंध है। इनके ज्यादातर निबंध प्राय: भावात्मक हैं, उनके निबंध पिटी-पिटाई लीक पर नहीं चले। उनका अनुठापन निराला है। यद्यपि उन्होंने बहुत कम लिखा है, जो लिखा है वह उनके प्रौढ़ अनुभव, परिपक्व सामर्थ्य एवं भावुक दृष्टिकोण तथा ज्ञान का परिचायक है। उनके कतिपय निबंधों से ही हमें उद्भावनाशक्ति, और मौलिक प्रतिभा का सहज आभास मिल जाता है। सरदार पूर्णसिंह के निबंध पूर्णत: व्यक्तिनिष्ठ है इतना ही नहीं व्यक्ति-व्यंजकता और साहित्यिकता के हिन्दी निबंध साहित्य में उज्ज्वल दृष्टांत है। उनके निबंधों में स्वाधीन चिंतन, प्रभावशाली व्यक्तित्व, निश्छल निर्मल अनुभूति, आकर्षक

आत्मीयता, मधुरता और भावों का उद्वेग मिलता है ।

भावाभिव्यक्ति की प्रभावशीलता, शैली की सरसता एवं भावात्मक तथा शब्दों की काव्यमय सरसता ने उनके निबंधों को प्रमुखता प्रदान की है । भाषा विषयानुकूल , सरल, मधुर, गंभीर बनती चलती है । वे अपने विचारों को स्पष्ट करते हुए कथात्मकता के माध्यम से निबंध को सरस बनाते हैं । ऐसा लगता है कि मानों पाठकों को लेखक कथा सुना रहा है । छोटे-छोटे वाक्य, सरस शब्दावली सर्वग्राह्य है । इतना ही नहीं- सजीव भाषा के माध्यम से वे अपनी इच्छित वस्तु का चित्र खींच देते हैं । वे अनेक बार अपने निबंधों में कथ्यात्मक उपकरणों का प्रयोग भी करते हैं । कहीं- कहीं प्रश्नात्मक भाषा लिखकर उसे और भी आकर्षक एवं प्रभावशाली बनाते हैं । उनके निबंधों का गठन और कसाव विशिष्ट है । व्यर्थ की बातों को भरकर वे उन्हें लम्बा नहीं बनाना चाहते । थोड़े में अधिक कहने की इच्छा उनका प्रमुख गुण है । संक्षेप में उनके निबंधों में एक लेखक की सरसता, निबंधों में उसके निर्वाह की क्षमता, उपदेश, ललकार, क्षोभ, वर्णन, चित्रात्मक प्रस्तुतीकरण साथ ही आत्मीयता से आवेष्टित निकटता की प्रतीति मिलती है ।

सारांश यह है कि सरदारपूर्णसिंह की भाषा में अलंकारिकता है इतना ही नहीं- स्थान-स्थान पर विरोधाभास द्वारा निबंधकार के चातुर्य का यथार्थ परिचय होता है । अनेक उद्धरण देकर अपनी धारणा स्थापित करना-इनकी अभिव्यक्ति शैली की विशेषता है । इनके निबंधों का विलक्षण सौंदर्य है । दार्शनिकता, भावात्मकता, सामाजिकता तथा काव्यात्मकता का एकत्रीकरण एक नया आस्वाद पैदा करता है । इनके निबंधों का मूल आधार उनका आध्यात्मिक दृष्टिकोण और मानवीय साधारणता है । भाषा विषयक उनकी नीति उदार थी । उर्दू,फारसी, संस्कृत शब्दों के प्रचलित रूपों को उन्होंने प्रयोग किया है । जन-साधारण में प्रचलित सुबोध शब्दावली उनके निबंधों में मिलती है । पूर्णसिंह का व्यक्तित्व अद्भुत था । उद्भट और प्रतिभाशाली विद्वान के रूप में उनकी प्रतिभा थी वे प्रथम श्रेणी के वक्ता थे । भावुकता उनमें कूट-कूटकर भरी हुई थी । इसी भावुकता ने उन्हें एक ओर सामान्य सांसारिक जीवन से विरक्त, समस्त

मानवता पर श्रद्धा, विश्वास और स्नेह करनेवाला बना दिया था । वे देशभक्त, धार्मिक वृत्ति के और रहस्यवादी कवि वृत्ति के भी थे । चन्द्रधर शर्मा गुलेरी जी ने निबंध बहुत कम लिखे हैं- परन्तु प्रौढ़ लेखनी एवं व्यापक ज्ञान तथा सरल भाषा के प्रयोग के कारण उनको निबंध के क्षेत्र में अच्छी ख्याति मिली है । उनमें प्राचीन एवं नवीन का अद्भुत सम्मिश्रण मिलता है । इतना ही नहीं- उनमें विनोद, गंभीरता, और सरलता भी उतनी ही मिलती है । डा० नगेन्द्र के अनुसार उनका व्यक्तित्व बेजोड़ है । उच्च कोटि की विद्वता के साथ उनकी प्राञ्जलता भी उनके व्यक्तित्व में पाई जाती है । पं० चन्द्रधर शर्मा गुलेरी द्विवेदी युग के अत्यन्त महत्वपूर्ण निबंधकार हैं । उनके दोनों निबंधों में लेखक का व्यक्तित्व चमक उठता है । उनके दो निबंध `कछुआ धर्म`, और `मोरेसि मोहि कुठाउं` मिलते हैं । इसके अतिरिक्त `समालोचक` पत्र के माध्यम से उन्होंने दो प्रकार के निबंध लिखे- एक तो गंभीर विषयों से संपन्न दार्शनिक, सांस्कृतिक विवेचन के लिखे गए निबंध- दूसरे सामाजिक, ऐतिहासिक और आलोचनात्मक निबंध ।

पं० गुलेरी जी के निबंधों में भाषा उनके व्यक्तित्व की परिचायक है । जिस प्रकार वे स्पष्ट, सरल, और व्यावहारिक तथा गंभीर व्यक्तित्ववाले व्यक्ति थे, उसी प्रकार उनकी भाषा भी स्पष्ट, सरल और शिष्टतापूर्ण होते हुए भी गंभीर थी । वाक्य-विन्यास आकर्षक और मुहावरेदार था । अपने निबंधों में वे मुहावरों और व्यंग्यविनोद का प्रयोग विशेष रूप से करते हैं । एक ओर उनकी भाषा का यह रूप दूसरी ओर उनमें क्लिष्टता और गंभीरता भी है । वे सामान्य विषयों को लेकर भी ऐसे दार्शनिक, गंभीर विषयों पर पहुंच जाते हैं कि जिन्हें समझ पाना पाठकों के लिए कठिन बनता है । उनकी विशेषता है संस्कृत शब्दावली और उपदेश की प्रवृत्ति, ग्रामीण शब्दावली का प्रयोग और विषय का प्रतिपादन, प्रस्तुतिकरण और स्पष्टीकरण ।

जहां तक गुलेरी जी की शैली एवं भावभंगिमा का प्रश्न है वह अति उत्कृष्ट एवं सरस है । चलते-फिरते सरल, परंतु अर्थगर्भित शब्दों की कसावट एवं आकर्षक, मुहावरेदार

वाक्य रचना से इनकी शैली में चमत्कार सा आ गया है । शैली की गतिशीलता ही गुलेरी जी की प्रमुख विशेषता है । गुलेरी जी की शैली में बनावट नहीं, व्यक्तित्व की छाप हैं । रोचकता, स्पष्टता-अनर्गल विस्तार की न्यूनता एवं विनोदपूर्ण वक्रता तथा विषय प्रतिपादन की क्षमता भी उसमें है । आधुनिक विशुद्ध निबंधों की शैली के सारे गुण इनमें पाये जाते हैं । माधवप्रसाद मिश्र- विषयनिष्ठ निबंध परम्परा के श्रेष्ठ निबंधकार थे । मिश्र जी बड़े तेजस्वी, प्रभावशाली तथा गंभीर निबंधकार थे । उनके अधिकांश निबंध आतुरता लिए हुए हैं । इनमें लेखक के प्रचंड पांडित्य का प्रदर्शन भी हुआ है । इन्होंने सांस्कृतिक विचार प्रधान, भावप्रधान निबंधों के अतिरिक्त वर्णनात्मक, विवरणात्मक आदि सभी प्रकारों के निबंध लिखे । इनके निबंध `माधव मिश्र निबंध माला` में संग्रहीत हैं । `रामलीला`, `होली`, श्रीपंचमी`, `व्यासपूजा`, `अयोध्या द्वारका`, `मथुरा`, जीवन संग्राम में विजय पाने के उपाय आदि इनके प्रसिद्ध निबंध हैं । उनका `सब मिट्टी हो गया` शीर्षक निबंध उच्च कोटि का है । उसमें हृदयग्राही निबंधकार के दर्शन होते हैं । वे सनातनधर्म के कट्टर अनुयायी थे । आवेश में आकर बड़े शक्तिशाली निबंध लिखते थे । उनके अनेक निबंध निबंध न रहकर प्रबंध बन गये । वे अपने व्यक्तिगत जीवन में जैसे अत्यन्त कर्मठ और पुरातन प्रेमी थे, वैसे ही अपने निबंधों में भी,वे मासिक पत्रिका `सुदर्शन` के संपादक थे । हिन्दी भाषा का प्रचार और सनातन धर्म का प्रसार इनकी पत्रिका का मुख्य उद्देश्य था । वे समाजसुधार, देशोद्धार, स्वराज्य से भी अधिक श्रुति-स्मृति, पुराण आदि पर विश्वास करते थे और उनकी यह धार्मिक भावना उनकी सभी रचनाओं में मिलती है ।

मिश्र जी की भाषा शैली के सभी कायल थे । क्षोभ और आवेश उनकी शैली के प्रधान प्रेरणा थे । `बिना एक्साइट` हुए वे लिख नहीं सकते थे । शैलीकार के रूप में उनकी अन्य अनेक विशेषताएं थीं। जैसे कि- निबंध में वे कहानी के समान आकर्षक वातावरण बनाये रखते थे । विषय का चयन अत्यन्त व्यापक था और

उससे उनकी भाषा में कोई फर्क नहीं पड़ता । उनके गंभीर से गंभीर विषय में भावुकता, आवेश और नाटकीयता रहती हैं । इतना ही नहीं उनके साहित्यिक निबंधों में विवेचना, तर्क, आवेश, क्षोभ, भावुकता मिलती है । भाषा को लेकर उनका दृष्टिकोण शुद्धतावादी था और वे संस्कृतनिष्ठ हिंदी लिखने के पक्ष में थे । उर्दू के इने-गिने शब्द उनकी भाषा में मिल जाते हैं पर अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग उन्होंने काफी किया है । पंडित गोविंदनारायण मिश्र वस्तुत: द्विवेदीयुग के आरंभकालीन निबंधकार हैं । मिश्र जी के निबंधों में संस्कृत पदावली का इतना बाहुल्य है और काव्यात्मक स्पर्श इतने अधिक रहते हैं कि उनमें स्थान-स्थान पर बाणभट्ट की कला का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है । मिश्र जी ने अपने अधिकांश निबंध साहित्यिक विषयों पर ही लिखे । इनके निबंध सामयिक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित थे । यथा- 'सार सुधानिधि' 'उचितवक्ता', धर्म दिवाकर' आदि । 'गोविंद निबंधावली' शीर्षक निबंधों का संग्रह है । इनकी निजी पांडित्य से भरी हुई शैली इन्हीं तक सीमित रही । इनके निबंध 'कवि और चित्रकार' को पढ़कर ऐसा लगता है कि उन्होंने हिंदी में 'कादंबरी' शैली की रचना प्रस्तुत की है । इनमें समास बहुलता के साथ-साथ अनुप्रास का चमत्कार है। निबंधकार के भाव को ग्रहण करने में पाठक असमर्थ सा रहता है । उनके इस निबंध में कवि और चित्रकार की व्याख्या, विवेचन, विवरणरहित केवल लम्बे लम्बे समासों में हिंदी रचना का चमत्कार ही अधिक प्रदर्शित किया गया है । 'आत्माराम की टेंटें' उनका विख्यात निबंध है इसमें व्याकरण सम्बंधी भूलों की विवेचना है, भाषा की विशुद्धता के लिए उपदेश दिए गए हैं । आरंभ में शैली अत्यन्त मनोरंजक है परन्तु यह अंत में चलकर बोझिल बन गई हैं ।

उनकी भाषा अत्यन्त स्वाभाविक तथा सरल है । भाषा चमत्कार का कहीं आभास भी नहीं दिखाई देता । लंबे वाक्य लिखना मिश्र जी की प्रमुख विशेषता है । पंडित जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी को हिंदी का हास्यावतार कहा गया है । 'गद्यमाला', 'अनुप्रास का अन्वेषण', 'हमारी शिक्षा किस भाषा में हो', आदि उनके निबंध विशेष

प्रसिद्ध है । इनके अधिकांश निबंध आलोचनात्मक ही हैं । व्याख्यानात्मक निबंधों में निबंधकार एक स्वतंत्र समीक्षक की भांति अपने स्वाधीन विचार प्रकट करते हैं । चतुर्वेदी जी ने अपने निबंधों को उद्धरण, पुनरुक्ति, हास्य-विनोद आदि के द्वारा अधिक रोचक तथा बोधक बना दिया है । इनका शिष्ट हास्य यथार्थ में बड़ा ही मार्मिक है । श्यामसुंदरदास द्विवेदी युग के विचारात्मक निबंधकारों में सर्वप्रमुख हैं । द्विवेदी जी से पहले १९०० से १९०३ तक 'सरस्वती' का संपादन उन्होंने ही किया । इनके अधिकांश निबंध भाषा या साहित्य विषयक हैं । गंभीर विश्लेषणात्मक और वक्तव्य की सुस्पष्टता इनके निबंधों की विशेषता है । वे गंभीर से गंभीर विषय को सरल बनाने में प्रवीण थे । इन्होंने अलग-अलग प्रकार के निबंध लिखे । निबंध शैली को वह गंभीर पुट दिया जो प्राय: अन्यत्र देखने में नहीं आया । इनके निबंधों की सामग्री का चयन विविध स्थानों से किया गया है । व्यास शैली को अपनाया है शैली गौण रूप में आती हैं । भाषा में उर्दू के शब्द बहुत ही कम हैं । निबंधों में अंग्रेजी शब्द के प्रयोग किए हैं परंतु उसमें से विदेशीपन निकल गया है । शुद्ध तत्सम शब्दों का प्रयोग हुआ है । फिर भी इनकी भाषा में स्वाभाविक प्रवाह और स्पष्टता है । विचारात्मक निबंधों में उनका स्थान बहुत ऊंचा है । निबंधों का प्रमुख गुण आत्मीयता होने से लेखक और पाठक के बीच में कोई दुराव नहीं है । इतना ही नहीं, इनके निबंधों में 'अहं' अधिक प्रतिष्ठित है जिससे इनको पढ़ने में समय लगता है कि वे स्वगतकथन कर रहे हैं । वे 'प्रताप' के संपादक थे । प्रचापचरित्र' इनका भावात्मक निबंध है । एक प्रख्यात पत्रकार तथा राजनीतिक होने के कारण इन्होंने अपनी भाषा को जन-साधारण की भाषा ही बनाए रखा । बोलचाल की सामान्य भाषा में उर्दू के चलते हुए शब्दों को भी पूर्णतया अपनाया । इनकी शैली में सरसता और कहीं-कहीं हास्य व्यंग्यात्मकता भी मिलती हैं । कहीं-कहीं वकृत्वात्मक शैली को चरम सीमा पर पहुंचाया है । पद्मसिंह शर्मा हिंदी निबंध साहित्य में तुलनात्मक आलोचना के उन्नायक हैं । इनके निबंध बड़े मनोरंजक तथा व्यक्ति तत्व प्रधान रचना के श्रेष्ठ उदाहरण हैं । उन्होंने विचारात्मक

आलोचनात्मक, भावात्मक, संस्मरणात्मक, कथात्मक आदि निबंध लिखे। हिंदी में संस्मरणात्मक निबंधों तथा रेखाचित्रों का सूत्रपात शर्मा जी ने ही किया। `पद्मपराग` में इनके संस्मरणात्मक निबंधों तथा रेखाचित्रों का संकलन है तथा `प्रबंध मंजरी` में भावात्मक निबंध संगृहीत हैं। इनके आलोचनात्मक निबंधों में विवेचन शैली की प्रधानता है, आलंकारिक शैली का प्रयोग भी इन्होंने किया है। विक्षेप शैली में लिखा हुआ भावात्मक निबंध पं० गणपति शर्मा ` अति प्रसिद्ध है। सारांशत: पं० पद्मसिंह शर्मा अपनी निजी शैली के निबंधकार थे। पं० किशोरीदास बाजपेयी के निबंध प्राय: गंभीर तथा आलोनात्मक हैं। इनके निबंधों का संग्रह `साहित्य की अनुक्रमणिका ` नाम से प्रकाशित हैं। बाबू यशोदानंदन अखौरी ने जीवन का अधिकांश भाग पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादन में बिताया और निबंध लिखकर निबंध रचना का कार्य भी किया। इनका निबंध`इत्यादि की आत्मकहानी` सुन्दर और चलती हुई भाषा में लिखा गया है। आवश्यकता पड़ने पर उन्होंने अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया है। चलते उर्दू शब्दों को भी अपनाया है। श्री कृष्ण बलदेव वर्मा ने वर्णनात्मक निबंध लिखे हैं। `बुन्देलखण्ड पर्यटन`, `कवीन्द्र के शव का ओड़छा` इनका सुंदर निबंध है। भाषा शैली सरस और सुबोध है, भाषा का प्रवाह काव्यात्मक है। स्वामी सत्यदेव परिव्राजक अपने ओजपूर्ण लेखन से द्विवेदी युग में प्रख्यात हैं। वे हिन्दू संस्कृति के प्रबल पोषक, ब्रह्मचर्य, संयम, त्याग को मूल्य देनेवाले हैं। इनके निबंधों की प्रमुख विशेषता उपदेशात्मकता थी। इससे इनके निबंधों में भाषण शैली का ओज विद्यमान है। `सत्य निबंधावली` उनके निबंधों का संग्रह है। बाबू शिवपूजन सहाय के निबंधों में हास्य-व्यंग्य का पुट है। अपनी भाषा शैली में सरल एवं व्यावहारिक प्रणाली अपनायी है। संलापात्मक शैली के भी कुछ निबंध लिखे, जिनमें बातचीत जैसी शैली का उन्होंने अनुकरण किया है। डा० भगवानदास ने आध्यात्मिक तथा दार्शनिक विषयों पर निबंध लिखे। इनके निबंधों के संग्रह `विविधार्थ` तथा `सार संग्रह` महत्वपूर्ण हैं। निबंध शैली अत्यन्त गंभीर, तर्कयुक्त और संतुलित है। भाषा सरल और बोधगम्य है। उर्दू शब्दों का प्रयोग किया है। गांधी के `सर्वधर्मसमभाव` से प्रभावित हैं। इनका सांस्कृतिक दृष्टिकोण

बुद्धिवाद से संतुष्ट है । इनके निबंध विचार प्रधान हैं । पं० अयोध्याप्रसाद सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' द्विवेदी काल के मननशील लेखक हैं। पहले कवि बाद में निबंधकार हैं उनके निबंध प्राय: साहित्यिक और विचारात्मक हैं । इनके निबंधों में पद्य की सी गतिमयता है । वाक्य रचना संयत है छोटे-छोटे पदों का विन्यास प्राय: ही मिलता है । श्री जगदीश झा 'विमल' के निबंधों में कवित्व शक्ति का सुन्दर संन्निवेश हम पाते हैं । इनके छोटे-छोटे निबंधों का संग्रह 'तरंगिणी' नाम से प्रकाशित है । 'लोभ', 'आशा', स्वार्थ 'धर्म, अर्थ, क्रोध, चिंता आदि निबंध हैं । कभी- कभी 'विमल जी' अनुप्रास के मोह में अपने विचारों कने को कहीं छोड़ बैठते हैं ।

निष्कर्षरूप से कहा जा सकता है कि भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के पश्चात् आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी को हिंदी निबंध के विकास की दृष्टि से युगपुरुष माना जाता है । द्विवेदी युग गंभीर, पुष्ट और ऋजु निबंधों का रचनाकाल रहा है । उनकी 'सरस्वती' प्रकाश किरणों को प्रत्येक लेखक के पास वहन करती थी और प्रत्येक लेखक के लिए 'सरस्वती' के निबंध रचनाकार्य के उदाहरण थे और द्विवेदी जी के शब्द प्रेरणा थे । द्विवेदी जी ने भाषा, शैली और विषय सभी दृष्टियों से एक नया युग स्थापित किया । इस युग की निबंध रचना में अनगढ़ता नहीं है परिमार्जन का सार्वत्रिक विनियोग है ।

शुक्ल युग :

हिंदी साहित्य में निबंध के विकास का तीसरा चरण सन् १९२० में प्रथम महायुद्ध के समाप्त होने के बाद आरंभ हुआ । जिसे शुक्ल युग या उत्कर्षकाल कहते हैं । इस युग के आरंभकर्ता आचार्य रामचन्द्र शुक्ल थे । हिंदी साहित्य में शुक्ल जी ने इसी काल में लिखना आरंभ किया । वैसे तो वे द्विवेदी युग में भी लिखते थे किंतु उनकी अर्जितावस्था द्विवेदी युग के पश्चात ही यानी शुक्ल युग में प्रकट हुई । इस युग में शुक्ल जी ने उच्च अध्ययन और गुरु गंभीर प्रकृति के परिचयात्मक निबंध लिखे, ये इतने उत्कृष्ट

समझे गये कि इससे संपूर्ण निबंधों की प्रवृत्ति, विचारधारा, और शैली बदल गई। इस युग में साहित्य, कला, दर्शन, जीवन और राजनीति सभी का दृष्टिकोण बदलने लगा। इतना ही नहीं, विचारों की प्रौढ़ता सूक्ष्म निरीक्षण एवं गूढ़ अध्ययन इस युग के निबंधों की प्रमुख विशेषता रही। विषय, शैली, स्वरूप, भाव और भाषा की दृष्टि से इस युग में निबंधों का सर्वांगीण विकास हुआ। आचार्य शुक्ल ने अपने गंभीर निबंधों के रूप में इस युग का प्रवर्तन किया और निबंध साहित्य को नवीनता प्रदान की। आचार्य शुक्ल ने निबंध में विचारों के `कसाव` का विधान किया और उन्होंने उन्हीं निबंध को श्रेष्ठ माना जिनमें नवीन विचारों की कल्पना या आविष्कार हो। इतना ही नहीं- शुक्ल युग के निबंध प्रौढ़ एवं शक्ति सम्पन्न हैं। इस काल के लेखक अधिकांशत: आलोचनात्मक निबंध लिखने की ओर प्रवृत्त हुए, अर्थात् वे पहले आलोचक हैं निबंध लेखक बाद में। संक्षेप में इस युग की विशेषताओं और सीमाओं को लक्षित करके लिखनेवाले अनेक उच्चकोटि के निबंधकार हिंदी में हुए। विषय वैविध्य की दृष्टि से इस युग में विचारात्मक, आलोचनात्मक, भावात्मक, वर्णनात्मक तथा विवरणात्मक आदि सभी प्रकार के निबंध लिखे गए। आचार्य शुक्ल जी के निबंधों में उनका मस्तिष्क ही नहीं हृदय भी रमा है। शुक्ल जी के ~~मर्मस्पर्श~~ मार्गदर्शन से उस युग के निबंध लेखक परिचय, विवरण अथवा भावोद्रेक के मोह को छोड़कर अनुशीलन, आलोचना तथा वस्तु के मूल तत्व की शोध में तथा प्रत्येक वस्तु उसकी बौद्धिक व्याख्या और विवेचन करने में प्रवृत्त हुए।

इस युग के प्रमुख निबंधकारों में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पं० माखनलाल चतुर्वेदी, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, सियाराम शरण गुप्त, गुलाबराय, शांतिप्रिय द्विवेदी, मुंशी प्रेमचन्द्र, पं०सूर्यकान्त त्रिपाठी `निराला`, डा० रघुवीर सिंह, बनारसीदास चतुर्वेदी आदि आते हैं।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के साहित्य क्षेत्र में पदार्पण से न केवल गद्य के वरन्

निबंध, आलोचना, इतिहास लेखन आदि विधाएं भी एक अलग स्तर पर जा बैठती हैं। शुक्ल जी हिंदी में विचारात्मक निबंध साहित्य के अनन्य स्रष्टा थे। इसके अतिरिक्त उन्होंने अनेक प्रकार के निबंध लिखे। उनके प्रारंभिक निबंधों में 'साहित्य', 'मित्रता', 'कविता क्या है ?', 'राधाकृष्णादास जी की जीवनी', 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र', 'फ्रैड्रिक पिनकॉट', 'प्राचीन भारतवासीयों का पहरावा', 'महाराज कनिष्क का स्तूप', 'बुद्धदेव की हड्डियां आदि आते हैं। इसके अतिरिक्त वैज्ञानिक दृष्टि से लिखा गया 'विश्व प्रपंच की भूमिका' शीर्षक निबंध है। इनके साहित्येतर निबंधों में पुरातत्व, इतिहास, विज्ञान, आदि विविध विषयों के निबंध आते हैं। इनके साहित्यिक निबंधों में वैचारिक, सैद्धांतिक और व्यावहारिक प्रकार के निबंध आते हैं। उनके प्राय: सभी निबंध 'लोकमंगल' की भावना से ओतप्रोत हैं। 'चिंतामणि भाग-१' में सारी रचनाएं नीति तथा मर्यादा से अनुप्राणित जीवनभूमि पर या साहित्यानुभूति पर आधारित हैं। शुक्ल जी सहज सिद्धांतवादी, अध्ययनशील, चिंतक, एवं मर्यादाशील भावुक निबंधकार थे। वे प्रकृति और अतीत के प्रति भावुक थे। उनकी यह भावुकता उनके साहित्य में सर्वत्र व्याप्त है। वे अपनी मान्यताओं के आधार पर ही कृति और कृतिकार को उसके देश और काल के संदर्भ में आंकते थे। इस प्रकार निबंध का अत्यन्त परिष्कृतरूप शुक्ल जी में उतर आया। आदर्श निबंध उनकी दृष्टि में वही थे जिनमें विचारों का गुम्फन पाठक की बुद्धि को उत्तेजित कर उसे नयी दिशा में सोचने पर मजबूर करे।

शुक्ल जी का व्यक्तित्व गंभीर था। प्रखर पांडित्य, तलस्पर्शी विद्वता, गहन चिंतन, और दार्शनिकता उनके व्यक्तित्व के प्रमुख गुण थे। उनके निबंधों में सर्वत्र उन्हीं की अभिव्यक्ति है। इतना ही नहीं, कहीं- कहीं इस गुरु गंभीर व्यक्तित्व में सरसता, भावुकता, सहजता एवं व्यंग्यात्मकता भी है। निबंधकार के मानसिक संघटन, संस्कार और अध्ययन का निबंधों पर जो प्रभाव पड़ता है उसे व्यक्तिगत विशेषता के अंतर्गत माना गया है। उनके निबंधकार को जैसे उनका समीक्षक प्रभावित कर रहा था। वैसे उनके समस्त व्यक्तित्व को नैतिक सामाजिक चेतना प्रभावित कर रही थी। उनके संस्कार पूर्णतया भारतीय और कुछ हद तक कर्मठ थे। भाषा के सम्बंध में वे अत्यन्त

सजग थे । विषय के अनुसार भाषा का उन्होंने गठन किया । उनके निबंधों में तीन प्रकार की भाषा के दर्शन होते हैं - इसमें संस्कृत गर्भित, तत्सम् प्रधान सामयिक भाषा, दूसरी उर्दू और मुहावरों तथा लोकोक्ति मिश्रित तद्भव लसित व्यावहारिक भाषा और तीसरी इन दोनों के मध्य की भाषा, जहां प्रकृति और भावुकता की बात आती है वहां शुक्ल जी का कवि हृदय उमड़ पड़ता है और संस्कृत बहुल भाषा शैली को ग्रहण करता है। व्यंग्य विनोद, विषय के सरलीकरण के लिए उर्दू मिश्रित भाषा है । उनकी भाषा में सर्वत्र चुस्ती है और उसका गठन पूर्ण एवं प्रभावशाली है । उनको शब्द शक्ति का अपार ज्ञान था, संस्कृत, उर्दू, फारसी के अतिरिक्त लोकभाषाओं से भी उन्होंने शब्द लिये हैं । वे लोकोक्ति और मुहावरे को शक्ति और प्रामाणिकता प्रदान करते हैं और इनका सदुपयोग यथास्थान और यथाआवश्यक शुक्ल जी ने किया है । शुक्ल जी की वाक्य रचना बहुत ही सुगठित थी अपनी बात को प्रभावशाली बनाने के लिए एक ही प्रकार के संघटन वाले वाक्यों की आवृत्ति उन्होंने कई स्थानों पर की है ।

हिंदी साहित्य में नवीन और प्रौढ़ साहित्यिक शैलियों का प्रवर्तन आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने किया । हिन्दी गद्य में इनके पूर्व तक जितनी गद्य शैलियां प्रचलित एवं स्पृहणीय थी चाहे विश्लेषणात्मक हों, भावात्मक हों, आलंकारिक हों या सामान्य व्यावहारिक, सबका आवश्यक सटीक, स्पष्ट और प्रौढ़ दर्शन उनकी शैली में मिलता है । अलग-अलग शैलियों का प्रयोग इन्होंने अपने निबंधों में किया है । अपने विचारों को स्पष्ट करने के लिए तुलनात्मक शैली का भी सहारा लिया है । वे विषय को स्पष्ट और रोचक बनाने के लिए अन्तरकथाओं का प्रयोग भी करते हैं थे । वे मर्यादा में विश्वास करनेवाले गुरुगंभीर व्यक्ति थे इसीलिए उनके निबंध विचारों से लेकर अभिव्यक्ति तक पूर्ण मर्यादित हैं । उनमें पूर्ण ओज और व्यापक उदात्तता है । शुक्ल जी ने हिंदी निबंध साहित्य में प्राण प्रतिष्ठा ही नहीं की, भाव, भाषा, विचार और शैली सभी दृष्टियों से उसे विश्व साहित्य में प्रतिष्ठित करने का श्लाघनीय और गौरवपूर्ण कार्य किया ।

हिन्दी साहित्य में गुलाबराय जी एक ऐसे प्रतिभाशाली निबंधकार हैं - जिनका विकास भी हिन्दी निबंध के साथ ही हुआ है । इन्होंने भारतेन्दु युग में जन्म लिया । द्विवेदीयुग इनकी शिक्षा-दीक्षा तथा व्यक्ति तत्व निर्माण का समय था । इसी समय इन्होंने निबंध लिखना आरंभ किया था जबकि शुक्ल युग में इनकी निबंध कला प्रौढ़ावस्था को प्राप्त हुई तथा अद्यतन युग में भी वे निबंध साहित्य की श्रीवृद्धि करते रहे । बाबू जी द्विवेदी युग के निबंधकारों में अग्रगण्य हैं । इसी समय इन्होंने कतिपय निबंध लिखे, जबकि शुक्ल युग प्रमुखत: निबंधों का निर्माण काल रहा इससे वे शुक्लयुग के प्रमुख निबंधकारों में गिने गये ।

बाबू गुलाबराय जी के निबंध हिंदी साहित्य के अमर उदाहरण माने जाते हैं इन्होंने विचारात्मक, आलोचनात्मक, साहित्यिक, वैयक्तिक आदि सभी प्रकार के निबंध लिखे हैं । इनके विचारात्मक निबंधों पर दार्शनिकता की छाप लक्षित होती है । `मेरी असफलताएं` शीर्षक निबंध में उनके जीवन के निजी अनुभव एवं साधना दृष्टव्य हैं । `ठलुआक्लब` उनके व्यंग्यात्मक निबंधों का संग्रह है । मेरे निबंध जीवन और जगत` निबंध संग्रह, `मेरे मकान और मेरे नापिताचार्य`, `मेरी दैनिकी का एक पृष्ठ`, निबंध उनके वैयक्तिक प्रकार की कोटि में आते हैं । उन्होंने `मेरे निबंध जीवन और जगत्` की भूमिका में लिखा है `साहित्य में मेरे दो रूप हैं आलोचक और निबंधकार`, निबंधों की शैली मेरी है और उस पर मुझे गर्व भी है, मैं अपने निबंधों में अपेक्षाकृत वैज्ञानिक और विषयगत होते हुए भी उनकी साहित्यिकता को अक्षुण्य रख सका हूं । यही मेरे लेखन की विशेषता है ।` इनके निबंध विषय निष्ठ होते हुए भी वैयक्तिकता से ओतप्रोत है और साहित्यिक आलोचना की दृष्टि से उच्च कोटि के हैं । इतना ही नहीं- इसमें बोधगम्यता, मार्दव तथा आत्मीयता झलकती है । गुलाबराय जी की आत्मीयता एवं विनोदपूर्ण शैली निबंधों को रोचक एवं सुपाठ्य बना देती हैं । डाक्टरों, कम्युनिस्टों तथा बीमा एजेण्टों पर हल्के व्यंग्य किए गए हैं । शैली में मुहाविरे, लोकोक्तियां, एवं रामायण आदि के उद्धरणों के अतिरिक्त प्राप्त वचनों का पर्याप्त उपयोग है, निबंधों की भाषा में सादगी

है । कथा संचार का प्रवाह है मगर कहीं- कहीं कृत्रिमता भी है । साहित्यिक निबंधों में गुलाबराय जी ने रसमयता का निर्वाह करने का प्रयत्न किया है । इन निबंधों की शैली संयत और शिष्ट है । पर उसमें सांकेतिक व्यंग्य का पुट भी कहीं- कहीं दृष्टि-गोचर होता है । विचारात्मक निबंधों की शैली तार्किक है, इन्होंने हिन्दी निबन्ध साहित्य के विकास में विशिष्ट योग दिया है । सियाराम शरण गुप्त का `झूठा-सच` निबंध संग्रह हिन्दी साहित्य के निबन्ध निबंधों की परंपरा, में एक महत्वपूर्ण सोपान सिद्ध होता है । गुप्त जी ने विचारात्मक निबंध ही अधिक लिखे हैं । इनके निबंधों की सबसे बड़ी विशेषता व्यक्तित्वमयी सात्विक भावभूमि है । गांधीवादी दर्शन को इन्होंने अपने निबंधों में बड़ी सरलता के साथ प्रदर्श प्रदर्शित किया है । यहां तक कि ग्रामीण जीवन तथा ग्राम्य प्रकृति के बड़े ही मार्मिक तथा सजीव चित्र खींचे हैं । इन्होंने छोटे-मोटे विषयों पर निबंध लिखे हैं । इनके विचारात्मक निबंधों में-`मनुष्य की आयु दो सौ वर्ष`,`अन्य भाषा का मोह`,`साहित्य और राजनीति`,`साहित्य में क्लिष्टता` आदि हैं । इनके भावात्मक निबंधों में `हां`, नहीं, `कुट्टी`,`कविचर्चा` आदि उल्लेखनीय हैं । संस्मरणात्मक निबंधों के अंतर्गत `बाल्यस्मृति`,`मुन्शी जी`,`हिमालय की झलक`, आदि द्रष्टव्य हैं । जबकि वर्णनात्मक निबंधों में `घूंघट` एक सुन्दर रचना है । `झूठा सच` कथात्मक प्रकार का निबंध है ।`घोडाशाही` निबंध गुप्त जी की हास्य व्यंग्यात्मक शैली का अच्छा उदाहरण है । अपनी विशिष्ट शैली और दृष्टिकोण के कारण गुप्त जी के निबंध तत्कालीन साहित्य में उच्च स्थान प्राप्त कर सके और बहुजनों का स्नेह तथा आदर उन्हें बहुकाल तक मिलता रहा ।

गुप्त जी की भाषा सरल, सुबोध, और आकर्षक है । तार्किकता और भावुकता का उसमें अनोखा संगम है । उनकी भाषा न तो दलगश्रु भावुकता के कारण अस्तव्यस्त हुई है, न अत्यन्त तार्किकता के कारण कठोर और शुष्क । वाक्य सीधे,सरल और छोटे-छोटे हैं । कहावतों, मुहावरे एवं लोकोक्तियों का प्रयोग भी इन्होंने कई स्थानों पर किया । सूक्तियां, या सूत्रात्मक वाक्य भी उनकी भाषा में सहजता से प्राप्त

होते हैं । उच्च चिंतन और विचारों की मौलिकता उनके निबंधों की विशेषता है । उनकी भाषा पूर्णत: व्याकरण सम्मत है । अन्य भाषा के उन्हीं शब्दों का प्रयोग उन्होंने किया जो हिन्दी के साथ एक रूप बन गये हैं । उनके होते हुए भी उनकी भाषा नादमय संस्कृतनिष्ठ हिंदी का अति सुंदर प्रमाण कही जा सकती है । मानव जीवन के प्रति एक अत्यन्त उदार, सहानुभूति पूर्ण, यथार्थ एवं आशावादी दृष्टिकोण गुप्त जी के निबंधों में प्राप्त है । वैयक्तिकता उनके निबंधों में छाई हुई है । वे प्राचीन के प्रति आस्थावान, वे नूतन के प्रति सहृदय, स्वभाव से परम सात्विक, विनयशील, आस्तिक, मनुष्य की महानता पर विश्वास रखनेवाले, जीवन के दु:खों, पराभवों और उपेक्षाओं को शांतिभाव से पचा जानेवाले निबंधकार हैं । उनकी सादगी उनके निबंधों का सब कुछ बन बैठी है । संवेदनशील व्यक्तित्व की ऐसी निश्छल सरस अभिव्यक्ति बहुत ही कम निबंधकारों में मिलती हैं । पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी शुक्ल युग के प्रमुख निबंधकार हैं । देशी और विदेशी साहित्य का सम्यक अध्ययन करके इन्होंने साहित्य और कला पर अपने गंभीर विचार उपस्थित किए और विचारात्मक तथा आलोचनात्मक निबंधों के माध्यम से इन्हें अभिव्यक्त किया । उनके `पंचपात्र`, `प्रबंध पारिजात`, `कुछ और कुछ`, `बिखरे पन्ने`, `तुम्हारे लिए`, `प्रायश्चित`, `उन्मुक्ति का बंधन`, `तीर्थ सलिल यात्री`, `त्रिवेणी`, `मकरन्द बिन्दु` आदि निबंध हैं । `मेरे प्रिय निबंध` उनके श्रेष्ठ निबंधों का संग्रह माना गया है । निबंधकार के रूप में उन्होंने विविध विषयों पर निबंधों की रचना की । इनका निबंध लेखन द्विवेदी युग में आरंभ हुआ और उन पर शुक्ल युग का प्रभाव भी पड़ा । बख्शी जी के निबंधों के दो वर्ग स्पष्ट दिखाई पड़ते हैं । साधारण निबंध और साहित्यिक चिन्तन विषयक निबंध । उनके साधारण निबंधों की गणना वैयक्तिक कोटि में होगी। जिनमें मनोरंजन , चांचल्य और बहुश्रुतता है जबकि साहित्यिक चिंतन विषयक निबंध में उनका गांभीर्य, परिपक्व है । स्तर बौद्धिक और भारतीय संस्कृति की विचारणा को लिए हुए हैं । उनके विचारात्मकनिबंध बड़े विचारपूर्ण तथा हृदयस्पर्शी होते हैं । इनमें लालित्य भी मिलता है ।

निबंधकार के रूप में उन्होंने एक विशिष्ट शैली को जन्म दिया । उनकी

प्रतिपादन की शैली कुछ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की परंपरा पर चलनेवाली थी । पर प्रतिपाद्य उनका अपना था । भाषा को लेकर उनका दृष्टिकोण पूर्णतया शुद्धतावादी था । सरल, संस्कृतनिष्ठ हिंदी का प्रयोग उन्होंने किया । उर्दू, फारसी और अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग उनकी भाषा में अत्यन्त अल्प हुआ है । वाक्य उनके छोटे-छोटे और प्रवाही हैं । उन्होंने विदेशी शब्दों का बहिष्कार किया है । अपने निबंधों में तत्सम् शब्दों का अधिक प्रयोग किया है । इनकी भाषा संस्कृतनिष्ठ होते हुए भी रोचक, व्यावहारिक तथा बोधगम्य हैं, इतना ही नहीं, इनके निबंधों में व्यास शैली की प्रधानता मिलती है । वे रचना विन्यास की दृष्टि से पाश्चात्य लेखक, गार्डनर तथा भारतीय लेखकों में रवीन्द्रनाथ ठाकुर और शरदबाबू से काफी प्रभावित थे । उनका व्यक्ति तत्व ऋजु-सरल था। स्वभाव से वे आदर्शप्रिय और मर्यादावादी थे । उनकी अध्ययनशीलता तज्जन्य चिंतन-क्षमता, संतुलित निष्कर्ष एवं आदर्शप्रियता उनके निबंधों में देखी जा सकती है । उनकी विद्वता सतत अध्ययन और साधना का परिणाम थी । माखनलाल चतुर्वेदी की चार गद्य पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं । 'साहित्य देवता' हमारी दृष्टि से भावात्मक निबंध की कोटि में आती हैं । 'चिंतक की लाचारी' में उनके विविधभाषणों का संकलन है । इनकी अधिकांश रचनाएं स्वातंत्र्योत्तर कालीन हैं । 'समय के पांव' में विभिन्न व्यक्तियों के संस्मरण हैं । 'अमीर ईरादे गरीब इरादे' आदि उनके निबंध संग्रह हैं । ये निबंध चतुर्वेदी जी के अलग-अलग व्यक्ति तत्व प्रस्तुत करते हैं । काल की दृष्टि से चतुर्वेदी जी द्विवेदी युग से आधुनिककाल तक का प्रतिनिधित्व करते हैं । पर उनके ये निबंध इतने दीर्घकाल का प्रतिनिधित्व नहीं करते । इनमें गतकाल की स्थितियों की कुछ झीनी झांकियां मात्र हैं । इतना ही नहीं उनका व्यक्तित्व बहुमुखी था । कवि के रूप में, नाटककार के रूप में, कहानीकार के रूप में, पत्रकार के रूप में, वक्ता के रूप में एवं राजनीतिक कार्यकर्ता के रूप में उनको अपार ख्याति मिल चुकी थी । उनके निबंधों में उनका विविध भाषाओं का ज्ञान, अधिकार और दर्शन की प्रियता के कारण उनकी अद्भुत चिन्तनात्मक प्रवृत्ति देखी जा सकती है । उनका सारा जीवन संघर्ष में बीता, बचपन में वे दरिद्रता से, यौवन में विदेशी सत्ता से और वृद्धावस्था में शारीरिक बीमारियों से वे निरन्तर लड़ते ही रहे । वे बहुभाषाविद थे । हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी, बंगला, मराठी, गुजराती वे अच्छी तरह

जानते थे । उनके प्रिय विषय थे इतिहास और दर्शन । चतुर्वेदी जी की भाषा अलंकृत, लयबद्ध और वेगवती है उसे `लिरिकल प्रोज` कहा जा सकता है । उत्कृष्ट अभिव्यंजना शक्ति से युक्त उनकी भाषा में कथन की लाक्षणिकता, उर्दू की मुहावरेदानी, सुक्तिमयता, प्रवाह ओज एवं संवेदनशीलता का अदभुत समन्वय मिलता है । पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र की एक बहुमुखी प्रतिभा इनके व्यक्तिगत निबंधों में प्रस्फुटित हुई है । उन्होंने विचारात्मक, भावात्मक, वर्णनात्मक, विवरणात्मक आदि सभी प्रकार के निबंध लिखे हैं । उन्होंने भावात्मक निबंध अधिक लिखे । बुढ़ापा`, `गाली`, `मैं और भगवतीचरण वर्मा` आदि इनके प्रसिद्ध निबंध संग्रह हैं । इनके संस्मरणात्मक निबंधों में `व्यक्तिगत` संग्रह प्रसिद्ध है । व्यक्तिगत` निबंध संग्रह में उग्र जी ने अपने संसर्ग में आनेवाले व्यक्तियों के चित्र खींचे हैं जो बड़े मार्मिक हैं । इनके संस्मरण और रेखाचित्र बड़े प्रभावशाली हैं । उनका `मैं और भगवतीचरण वर्मा` शीर्षक निबंध संस्मरणात्मक ही नहीं, सुन्दर वैयक्तिक निबंध भी है । इसमें व्यक्तिगत अनुभवों के साथ अपने विषय में भी लेखक ने लिखा है । अर्थात् `अहं` को प्रतिष्ठित किया है । इनके निबंधों में भाषा नितान्त चलती सजीव और सरस है । संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू आदि सभी भाषाओं के शब्दों को अपनाया है । सद्गुरुशरण अवस्थी उच्चकोटि के निबंधकार हैं । इनके विचारात्मक, आलोचनात्मक निबंध उच्च कोटि के हैं । उनके निबंध संग्रह `हृदय ध्वनि`, `विचार विमर्श`, `भ्रमित पथिक`, `बुद्धि तरंग` आदि प्रकाशित हैं । `युद्ध` इक्का, आदि निबंध शुक्ल युग में लिखे गए हैं जबकि सौन्दर्य, `शील` द्विवेदी युग में लिखे गए निबंध हैं । `रहस्यवाद` पर इन्होंने सुंदर निबंध लिखा । उनके निबंध विचारात्मक होते हुए भी उनमें भावप्रकाशन का सायास प्रयास लक्षित है । शैली संश्लिष्ट है, भाषा का तत्समता की ओर अधिक झुकाव है । डा० रघुवीर सिंह शुक्ल युग के प्रमुख निबंधकार हैं । अधिकांशत: इन्होंने विवरणात्मक निबंध लिखे हैं । पत्र-पत्रिकाओं में इनके ऐतिहासिक निबंध मिलते हैं । `जीवन धूलि` और `शेष स्मृतियां` इनके भावात्मक निबंधों का संग्रह है । `शेष स्मृतियां` की भूमिका विचारात्मक निबंध का रूप लिए हुए हैं । इस संग्रह में पांच ऐतिहासिक भावात्मक निबंध- `ताज`, `एक स्वप्न की शेष स्मृतियां`, `अवशेष`, `तीन कबें` उजड़ा स्वर्ग` आदि मिलते हैं ।

इन निबंधों में विषय के अनुकूल भाषा का प्रयोग है जो सरल, सरस, और बोधगम्य है। इसके अतिरिक्त इनके वैविध्यपूर्ण निबंधों के दो संग्रह प्रकाशित हैं। जीवनकण' और 'सप्तदीप' । बनारसीदास चतुर्वेदी ने संस्मरणात्मक निबंध अधिक लिखे हैं । उन्होंने अधिकांशत: विख्यात पुरुषों के रेखाचित्र खींचे हैं, जो संस्मरण युक्त है । वैयक्तिक निबंध तथा रेखाचित्र को वे एक ही वस्तु मानते हैं । शुक्ल युग में ही इनके संस्मरणात्मक निबंधों का पूर्ण विकास हुआ । व्यंग्य शैली इनके निबंधों की विशेषता है । राष्ट्र के महान नेताओं, तपस्वियों, शिक्षाविदों, महात्माओं एवं समाज सुधारकों के अतिरिक्त उच्च-कोटि के साहित्यकारों पर लिखे गए चतुर्वेदी जी के संस्मरण हिन्दी साहित्य की अमूल्य-निधि है । एक सफल वक्ता, वार्ताकार, तथा आत्मीय परिचित के उनके सारे गुण उनकी रचनाओं में सहज ही देखे जा सकते हैं । अपनी इसी जिन्दादिली एवं दिलेरी के द्वारा चतुर्वेदी जी अपने सरस एवं प्राणवान् निबंधों में सभी को प्रभावित करते हैं । मुंशी प्रेमचंद जी के निबंधों में साहित्यिक विषयों तथा समस्याओं पर ही अधिक विचार हुआ है । निबंधों की भाषा प्राय: बोलचाल की है । मुहावरों के प्रयोगों से उसमें सजिवता आ जाती है । भाषा का चलता रूप ही इन्होंने अपने निबंधों में अपनाया है । संक्षेप में प्रेमचन्द जी के निबंध साहित्यिक होते हुए भी सरल हैं और वैयक्तिक शैली में लिखे गये हैं । इनके निबंध व्यक्तिगत छाप से युक्त विषयप्रधान निबंध ही हैं ।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि शुक्लयुग यथार्थ में विविध साहित्यिक हलचलों और आंदोलनों का युग था । इस युग की निबंध पद्धति वस्तुनिष्ठ और विचारात्मक तो थी ही किन्तु उसमें विविध शैलियां भी दृष्टिगोचर होती हैं । इसी युग में प्राचीन और पाश्चात्य देशों के विविध वादों और प्रयोगों के सम्बंध में निबंधकार ने अपने विचार व्यक्त किए । इतना ही नहीं इस युग में निबंधकार बौद्धिक अधिक हो गये । उन्होंने अपने तत्वचिंतन और ज्ञानगरिमा की अभिव्यक्ति का साधन निबंधों को बनाया । इस युग में गंभीर से गंभीर विचार और सूक्ष्म मनोवृत्ति को निबंध के रूप में कुशलता से व्यक्त किया गया । संक्षेप में शुक्ल युग में निबंध विकास की प्रौढावस्था को प्राप्त हुआ ।

इस युग में वैयक्तिक निबंध कम लिखे गए पर वैचारिक निबंधों का जो विशिष्ट उत्कर्ष हुआ वह वैयक्तिक निबंधों को उन्मत्त बनाने में सफल हुआ ।

शुक्लोत्तर युग :

१९४८ से हिन्दी साहित्य में निबंध के विकास का अंतिम चरण यानी वर्तमान युग का प्रारंभ हुआ । वर्तमान युग में भी शुक्ल युग का प्रभाव बना रहा । हिंदी साहित्य के निर्माण में प्रगतिशील निबंधकारों का इस युग में पर्याप्त विकास हुआ । शुक्ल युग में ही हिन्दी निबंध की वह क्रांति जड़ पकड़ रही थी जो वर्तमान युग को नयी वैयक्तिकता दे सकी । शुक्ल युग की प्रवृत्ति यथार्थवादी जीवनदृष्टि और भौतिकवादी मनोवृत्ति इस युग में प्रबल हुई । इतना ही नहीं नई दृष्टि और सृष्टि के अस्तित्व से शुक्लयुग की मान्यताएं शिथिल पड़ गईं, ध्वस्त हुईं । इस युग में आधुनिक शिक्षा का प्रसार हुआ । जिसके कारण पाठकों की संख्या बढ़ी और साहित्य क्षेत्र भी विस्तृत हुआ । निबंधकारों ने अपने निबंधों में पाश्चात्य प्रणाली के संलापात्मक वैयक्तिक निबंधों का निर्माण किया । इस युग में वैयक्तिक निबंधों का महत्व बढ़ा । भारत एक विचार प्रधान देश है । अतः यहां ललित निबंधों के साथ विचारात्मक और आलोचनात्मक निबंधों का भी विकास हुआ । वर्तमान युग निबंधों की समृद्धि का युग है । इस समय निबंधकारों ने विषय और शैली की दृष्टि से निबंधों को उत्कर्ष प्रदान किया । इस युग में वैयक्तिक निबंधों के अंतर्गत विषयों और व्यक्तित्व का समन्वय हुआ । यही इस युग की ~~विशे~~-- विशिष्टता है । विचारों और भावों को ~~कब~~- कलात्मक ढंग से व्यक्त किया जाने लगा। इस युग की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि इस युग में राजनीति और सामाजिक समस्याओं में ज्यादा परिवर्तन हुए । इस युग में ही देश स्वतंत्र हुआ और नई रचनाधारा का विकास हुआ । भारतीय संस्कृति तथा साहित्य पर मार्क्सवादी साहित्य तथा विचारधारा का प्रभाव पड़ा । अन्य साहित्यिक विधाओं तथा निबंध पर भी इसका प्रभाव पड़ा । इस युग में अलग अलग दृष्टिकोणों से निबंध लिखे गए । विषय वैविध्य तथा शैली वैविध्य इस युग के निबंधों की प्रमुख विशेषता है। किंतु निबंध रचना का उत्कृष्ट रूप आलोचनात्मक

निबंधों में ही मिला है । इस युग के कई निबंधकार आचार्य शुक्ल जी की परंपरा को विकसित करते हुए दिखाई देते हैं ।

इस युग के प्रमुख निबंधकारों में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, शांतिप्रिय द्विवेदी, नगेन्द्र, जैनेन्द्रकुमार, डा० रामविलास शर्मा, अज्ञेय, इलाचंद्र जोशी, रामवृक्ष बेनीपुरी, महादेवी वर्मा, विद्यानिवास मिश्र,`प्रभाकर`, भुवनेश्वर नाथ मिश्र `माधव`, डा० नगेन्द्र, धर्मवीर भारती, विवेकीराय आदि आते हैं । आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी वर्तमान युग के निबंध लेखकों में अग्रगण्य हैं । वे आधुनिक युग के प्रतिभाशाली निबंधकार हैं । हिन्दी निबंध साहित्य को भारतीय परंपरा और उन्मुक्त वातावरण में लाने का श्रेय आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी को ही है । संस्कृत-साहित्य के गंभीर अध्ययन और भारतीय संस्कृति की विचारधारा से प्रभावित होकर द्विवेदी जी ने विभिन्न प्रकार के निबंध लिखे । वैयक्तिक निबंध लिखकर उन्होंने हिंदी निबंध साहित्य को गौरव प्रदान किया । उन्होंने विचारात्मक, भावात्मक, वर्णनात्मक, विवरणात्मक, आलोचनात्मक, समालोचनात्मक आदि सभी प्रकार के निबंधों की रचना की । विषय की दृष्टि से प्राचीन और अर्वाचीन विषयों से सम्बंधित निबंध ~~भी-इन~~ भी इन्होंने लिखे । द्विवेदी जी की विद्वता इनके गंभीर निबंधों में मिलती है । प्राय: उनके सभी निबंधों में इनके व्यक्ति तत्व की छाप स्पष्ट लक्षित होती है ।

`आम फिर बौरा गये`, `शिरीष के फूल`, `बसंत आ गया`, `मेरी जन्मभूमि`, नाखून क्यों बढ़ते हैं`, `एक कुत्ता और एक मैना`, `अशोक के फूल, आदि इनके वैयक्तिक निबंधों के उत्कृष्ट उदाहरण हैं ।अशोक के फूल, कल्पलता, विचार और वितर्क विचार-प्रवाह आदि उनके निबंध संग्रह प्रकाशित हैं । द्विवेदी जी ने अपने निबंधों में भारतीय तथा पाश्चात्य निबंध प्रणाली का सुंदर समन्वय किया है ।

इनके निबंधों की शैली सौष्ठव की पूर्णरूप से विकसित हुआ है । `आम फिर बौरा गये`, `शिरीष के फूल, समालोचक की डाक, ब क्या आपने मेरी रचना पढ़ी है`

आदि निबंधों में व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग हुआ है । भाषा शैली की दृष्टि से इनकी दो प्रकार की रचनाएं हैं आलोचनात्मक तथा विचारात्मक निबंधों में इनकी तत्सम शब्दावली और पांडित्यपूर्ण विवेचन प्रमुखत: लक्षित होता है । जबकि इनके वैयक्तिक निबंधों में सरस, राजीव तथा बोधगम्य भाषा मिलती है । इतना ही नहीं बोलचाल के प्रचलित उर्दू शब्दों का भी प्रयोग इन्होंने किया है । आवश्यकता पड़ने पर वे अंग्रेजी शब्दों और प्रांतीय शब्द भी अपनाते नजर आते हैं । संक्षेप में द्विवेदी जी के अध्ययन का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है । संस्कृत, बंगला, हिन्दी और अंग्रेजी साहित्य का अभ्यास करनेवाले द्विवेदी जी पर संस्कृत और बंगला का प्रभाव लक्षित होता है । निबंधों में उनका व्यक्तित्व बड़ा दुर्निवार, निदुमिया प्रेम की तरह गंभीर, पर सब्र सदैव स्त्रयमान, महाकाल की रहस्य लीला से उन्मथित है । विभिन्न निबंधों में संस्कृति के अनेक रूपों का विशद वर्णन उन्होंने किया । पर कहीं भी देशाभिमान की मिथ्याभावना उनकी रचनाओं में दिखाई नहीं देती । अद्यतन युग के निबंध लेखकों में पं० शांतिप्रिय द्विवेदी का विशिष्ट स्थान है । उन्होंने प्रधानत: प्रभाववादी आलोचनात्मक निबंध लिखे । इसके अतिरिक्त विचारात्मक,भावात्मक,वैयक्तिक आदि प्रकार के निबंध भी लिखे । इनके वैयक्तिक निबंधों में विषयप्रतिपादन ही प्रमुख हैं । कहीं-कहीं भावुक स्पर्श के साथ इनके निबंधों की शैली डा० श्यामसुंदरदास की शैली का अनुसरण करती हैं । उनके अध्ययन और चिंतन पर शुक्लयुगीन प्रभाव लक्षित होता हैं । विचारात्मक निबंधों में द्विवेदी जी ने व्यक्तिगत अनुभवों का प्रतिपादन किया हैं । इस प्रकार के निबंधों में इन्होंने संस्कृत शब्दावली को अपनाया है । यही शैली इन्होंने आलोचनात्मक निबंधों में भी रखी है । 'जीवनयात्रा', साहित्यकी, 'हमारे साहित्य निर्माता', 'कवि और काव्य', 'संचारिणी', 'युग और साहित्य', 'सामयिकी', 'धरातल' आदि उनके निबंध संग्रह प्रकाशित हुए हैं । इसके अतिरिक्त पथचिन्ह', तथा 'परिव्राजक की प्रजा', इनके संस्मरणात्मक शैली में लिखे गए निबंध हैं । 'हिन्दी साहित्य कोष' में इनके जिन निबंधों को संस्मरणात्मक शैली माना है उन्हीं को कई समीक्षकों ने शुद्ध वैयक्तिक तथा वैयक्तिक निबंधों का एक-दूसरे से समीप सम्बंध है । संस्मरणात्मक निबंधों में इनकी भाषा शैली की भंगिमा बड़ी ही मनोरम है । जिसके

कारण उनके निबंध हृदयग्राही बन गये हैं । इनके छोटे-छोटे वाक्य भी मर्मस्पर्शी हैं । निबंधकार के हृदय की अंत:प्रेरणा ने ही इस प्रकार के निबंध लिखने के लिये इन्हें बाध्य किया है । प्रभाकर माचवे का व्यक्तित्व बहुरंगी है । कवि, कथाकार, आलोचक, संपादक एवं व्यंग्य लेखक के नाते उनकी प्रसिद्धि हिन्दी साहित्य में है । उनके निबंधों का प्रारंभ आकर्षक है । पाठक त्वरित उनके विवेचन की लपट में आ जाते हैं । निबंधों में प्रसंगों और भावों के अनुकूल उन्होंने दीर्घ एवं संक्षिप्त वाक्यों का प्रयोग किया है । उनके निबंधों में एक रस रसिक, उन्मुक्त और सरस मन की अभिव्यक्ति देने देखने को मिलती है । `गाली`, `नंबर आठ का जादू`, `छाता`, `मकान` आदि निबंधों का प्रारंभ आकर्षक है । इसके अलावा `खरगोश के सींग`, शीर्षक निबंध के कारण उनकी प्रसिद्धि अधिक हुई । `बेरंग` और `तेल की पकौड़ियां` में उनके हास्य व्यंग्यात्मक लेख संगृहीत हैं । उनकी भाषा में वक्रता है- लय है और आकर्षकता भी । उनकी अनेक उक्तियां भी मार्मिक हैं । उनके सभी निबंध बहुपठितता के साक्षी है । मुहावरों और व्यंग्य बाण का प्रयोग भी इन्होंने अच्छी तरह से किया है । हंसी-हंसी में माचवे जी बड़े तीखे नश्तर लगा देते हैं । वे अपने निबंधों को `ब्रिलिएण्ट नानसेन्स` कहते हैं । `ब्रिलिएण्ट नानसेंस` के पार्श्व में उनका चिंतन, अध्ययन, सूक्ष्म निरीक्षण, हास्य पैना व्यंग्य खड़ा है । माचवे जी निबंध को सामाजिक समीक्षा और विविध वार्ता का रोचक माध्यम बनाते हैं । मगर शहरी तबीयत और शिक्षा के बहुक्षेत्रीय पर्यटन के कारण उनके निबंधों में उतनी स्वाभाविकता या रागात्मकता नहीं आ पाती, जितनी हजारीप्रसाद द्विवेदी या सियाराम शरण गुप्त के निबंधों में । उनके निबंधों में व्यक्ति से अधिक विद्यार्थी ही दृष्टिगोचर होता है और हृदय से अधिक मस्तिष्क । निबंध को भारी-भरकम विषयों, गवेषणात्मक स्वर और काव्यालंकारिक बंधन से मुक्त रखने वालों में माचवे जी का नाम लिया जाएगा । विद्यानिवास मिश्र उत्कृष्ट व्यक्तिवादी निबंध लेखकों में से हैं । `तुम चंदन हम पानी`, `कदंब की फूली डाल`, `आंगन का पंछी और `बनजारा मन` आदि व्यक्ति व्यंजक निबंध संग्रह हैं । निबंधों की वर्तमान पीढ़ी में इनका ऐतिहासिक महत्व दृष्टिगोचर होता है । मिश्र जी के निबंधों में उनकी जीवन की घटनाओं, और चिंताओं का अंकन किया गया है । उनकी अभिव्यक्ति स्वत: का

आत्म प्रकाशन है । वे समस्याओं, विचारों, भावों एवं संदर्भों से अपने को जोड़ते हैं । इनके सारे निबंधों में लेखक का व्यक्तित्व स्पष्ट रूप से पाया जाता है । प्रधान रूप से वे वैयक्तिक निबंधकार हैं । व्यक्ति तत्व की सजगता, सहृदयता, ग्रहणशीलता, सहानुभूति-पूर्ण दृष्टिकोण और कोमल दृष्टिकोण के कारण निबंधकार कवि की भांति अपने निबंधों में भावपूर्ण चिंतन अंकित करते हैं । कवि की भावुकता हम मिश्र जी में पाते हैं । इनके निबंधों में उनकी सुखदुखात्मक अनुभूतियां, अतीत के प्रसंग, संस्मरण, दृश्य,पीड़ा,वेदना आदि प्रतिक्रियाएं मिलती हैं । जो कभी निराशा की ओर ले जाती हैं, तो कभी तथ्यों से परिचित कराती हैं तो कभी कर्तव्य के प्रति सजग करती हैं । संक्षेप में वे पाठकों को परिष्कार और कल्याण की ओर ले जाते हैं ।

मिश्र जी अपने निबंधों में वर्तमान समस्याओं और साहित्यिक नवीनताओं पर अपने विचार प्रदर्शित करते हैं । वे- राजनीतिक, साहित्यिक,सामाजिक समस्याओं पर उपालंभ , व्यंग्य तथा विनोद भी करते हैं । किसी एक छोटी सी बात को लेकर जाने कहां-कहां विचरण करते हैं ।इनके निबंधों में उच्छिन्न चिंतन अधिक मिलेगा । जो व्यक्तिवादी निबंधों का प्रमुख गुण है । `आंगन का पंछी` और बनजारा मन` उत्कृष्ट व्यक्तिवादी निबंधों का संग्रह है । उनके वर्णन में संस्कृत, अंग्रेजी के उद्धरण मिलते हैं । उनके विचार निर्भीक और स्वच्छन्द हैं । जो बात कहनी हो वे निःसंकोच कहते हैं । कन्हैयालाल मिश्र `प्रभाकर` ने अलग-अलग विषयों पर निबंध लिखे हैं । `माटी हो गई सोना`, बाजे पायलिया के घुंघरू`,`दीप जले शंख बजे` आदि उनके निबंध संग्रह प्रकाशित हैं । इनमें कुछ संस्मरणों और रेखाचित्रों के संग्रह भी सम्मिलित हैं। लेखक ने अति लगन एवं मनोयोग से राष्ट्रहित के लिए जीवन की बलि लगा देनेवाले शहीदों के रेखाचित्रों को प्रस्तुत किया है । इतना ही नहीं- जीवन की सामान्य से सामान्य घटनाओं को एक धागे में कुशलता के साथ पिरोकर उनके मूल्य को बढ़ा दिया है । प्रभाकर जी के निबंधों में हास्य-व्यंग्य, मधुरता, सरसता,स्वाभाविकता, आत्मव्यंजना, वैयक्तिकता, वेदना आदि का सुंदर सामंजस्य है जो अन्य निबंधकारों में देखने को नहीं मिलता ।

इनके भावों में स्निग्धता, तरलता, आत्मीयता, मधुरता का अद्भुत घोल है। इतना ही नहीं वैयक्तिक निबंधों में उनकी लेखनी प्रौढ़ है। निबंधों में कभी जीवन की सार्थकता, निरर्थकता का आत्मविश्लेषण है तो कहीं समाज व्यवस्था की अव्यावहारिकता पर खीज, आक्रोश, और वेदना भी। निबंधों में व्यक्तित्व की स्पष्ट छाप मिलती है। 'बाजे पायलिया के घुंघरू' मनोरंजक तथा व्यक्तित्व प्रधान रचना है। इसमें साधारण से साधारण बातों पर भी निबंध लिखे गये हैं। सबसे बड़ी विशेषता यह है कि अत्यन्त रोचक शैली में वे किसी विषय का प्रारंभ करते हैं। उर्दू, फारसी, अंग्रेजी, साहित्यिक ग्रामीण सभी प्रकार की शब्दावली का प्रयोग करते हुए वार्तालाप, प्रश्नात्मक, आत्म-विश्लेषण, वर्णन, दिग्दर्शन आदि सभी शैलियों में वे अपनी बात इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं कि पाठक इससे ऊब ही नहीं सकता। इसके अतिरिक्त कहावतों, मुहावरों का प्रयोग हास्य-व्यंग्य -विनोद, डांट-फटकार जैसे अनेक भाव इनके निबंधों में मिलते हैं। डा० इन्द्रनाथ मदान आलोचक के रूप में माने जाते हैं किंतु उनके द्वारा लिखे गए वैयक्तिक निबंधों में हमें एकदम दूसरा रूप मिलता है। उनके निबंध जीवन घटनाओं एवं प्रमुख प्रसंगों का परिचय देते हैं। हम इसमें आत्मकथा, आत्मचरित का रूप देख सकते हैं। निबंध और निबंध संकलन के निबंध डा० इन्द्रनाथ मदान द्वारा लिखित शुद्ध वैयक्तिक निबंध हैं। जिसमें उनके जीवन चरित, स्वभाव, चिंतन दृष्टियों, दु:खदर्दों और सम्मान-असम्मान के क्षणों की प्रतिक्रियाएं चित्रित हैं। वहां न तो चिंतन प्रधान है, न दर्शन और विद्वता, मगर एक आत्मीय मित्र स्वजन की खुली व्यंजनाएं हैं। जिसमें न दुराव है न कृत्रिमता। स्वयं लेखक ने उन्हें व्यक्तिगत निबंधों की संज्ञा प्रदान की है। व्यक्ति-वादी निबंध लेखकों की स्वच्छन्दता पर भरपूर उपयोग करते हुए कभी एक विषय पर रमते हैं कभी दूर छलांग लगा देते हैं। इससे मुख्य विषय दूर छूट जाता है और प्रसंगवश आये संदर्भ विषय प्रमुख बन जाते हैं। इनके निबंधों में न तो उर्दू-फारसी का दबाव है और न ही संस्कृत निष्ठता का तनाव। इसमें सीधी सादी सरल भाषा, सामान्य शब्दावली और वाक्यों का प्रयोग मिलता है। वियोगी हरि भावात्मक निबंध लेखकों में अग्रणी हैं।

भावात्मक निबंध लिखनेवाले व्यक्तित्व प्रधान निबंधकार श्री वियोगी हरि की शैली अपने ढंग की अलग है । उनके निबंधों को पढ़ने से ऐसा प्रतीत होता है जैसे कि वे किसी आत्मीय को उसके कर्तव्य के प्रति सचेत और उत्साहित कर रहे हों । इतना ही नहीं- उनके निबंधों में हमें व्यक्तित्वप्रधान निबंधों की सभी विशेषताएं मिलती हैं । उनके अनुसार निबंधों में निबंधकार स्वयं अपने को उतारकर रख देता है । विचारों और भावों के साथ ही आत्माभिव्यक्ति को स्थान दिया गया है । कथन का आकर्षण, शैली का चमत्कार, भावुकता का प्रलाप, आत्म व्यंजना द्वारा पाठक की आत्मीयता की तरलता, भाषा की प्रभविष्णुता उनके निबंधों के प्रमुख गुणों के अंतर्गत आते हैं । इतना ही नहीं- राष्ट्रीयता, देशप्रेम, सरसता, स्वाधीनता, वेदना आदि भावनाएं भी इनके निबंधों में मिलती है । ममता और आत्मीयता के साथ हल्का व्यंग्य भी है । समासों के कारण भाषा कहीं-कहीं दुरुह सी हो गई है । `भावना`, `अंतर्नाद` शीर्षक निबंध संग्रह में उनकी उक्त विशेषताएं लक्षित हैं । इन निबंधों में संस्कृत शब्दावली का प्रयोग किया गया है तो उर्दू शब्दों की सम उपेक्षा भी नहीं मिलती । यही सब गुण उनके निबंधों को उत्कृष्टता प्रदान करते हैं ।

भुवनेश्वरनाथ मिश्र `माधव` उन्मत्त आत्मा वाले, मस्त, सदा हंसनेवाले निबंधकार हैं । श्रद्धा, श्रृंगार और आमोद जैसी रसयात्रा उनके निबंधों में मिलती है अन्यत्र नहीं, माधव जी बड़े भावुक निबंधकार हैं । उनकी सी भावुकता हिंदी में कम गद्यकारों में मिलेगी । वे हास्य के ही नहीं करुणा के भी धनी हैं । उनके निबंधों में प्रकृति प्रेम की सप्रमाण और उन्मुक्त अभिव्यक्ति हुई है । `हंसता जीवन` शीर्षक निबंध संग्रह में साहित्य साधना, कला और सौंदर्य, `कठिनाई के समय` आदि व्यावहारिक निबंध संग्रहीत हैं । इसके अतिरिक्त `टहलने का आनंद` , `शेविंग एक कला, `ओ मेरे चप्पल`, आदि अनेक अविस्मरणीय उत्कृष्ट कोटि के निबंध हैं । `पूजा के फूल` निबंध तीव्र विरह, प्रेमजन्य-वेदना और उद्गारों से भरे निबंधों का संग्रह है । इन निबंधों में व्यक्ति त की जितनी बात नहीं उतनी रहस्य सम्बंधी बातें मिलती है । इस तरह माधव जी उस असीम सुंदर के सौंदर्य और हृदय में बजनेवाली मुरलीधर की बांसुरी के रसिक हैं । उनकी शैली में एक

मयूर नृत्य है । भाव में मोछकता और मांगलिकता दोनों है ।

नगेन्द्र जी विद्यार्थीकाल से ही आलोचनात्मक निबंध लिखने लग गए थे ।उनके कार्य का आरंभ `साहित्य-सन्देश` से माना जा सकता है । उन्होंने विवेच्य विषयों को नए-नए रोचक निबंधों से ग्रंथित किया । `विचार और अनुभूति`, `विचार और विवेचन`, `विचार और विश्लेषण` आदि उनके निबंध संग्रह हैं । अपने आलोचनात्मक निबंधों में विषय के प्रति संतुलन रखने के लिए तटस्थता का प्रयोग करते हैं । कला की दृष्टि से इन निबंधों का महत्व अधिक है । अपने विद्यार्थीकाल से आरंभ कर आज तक डा० नगेन्द्र निरंतर निबंध को अपने भावों और विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाते आए हैं ।प्रत्येक निबंध में इनके व्यक्तित्व की अचूक छाप है । और उन सब में समाहित मूल सूत्र एक ही है । वे अपने निबंधों में उतनी ही सावधानी और श्रम बरतते हैं जितना एक कुशल कवि अपनी कविता की रचना में । उनके अनुसार संपूर्ण निबंध एक कला सृष्टि है । उसका आदि, मध्य, अन्त अत्यन्त सावधानीपूर्वक प्रकल्पित और प्रणीत है । इनके निबंध आलोचनापरक होते हुए भी कलात्मक कृतियां हैं । उनमें प्रत्येक शब्द अपनी अनिवार्यता से उपस्थित है । इसमें न कहीं अनावश्यक विस्तार है न उलझन । अपनी अनवरत साहित्य साधना से डा० नगेन्द्र ने हिंदी साहित्य को जो दान दिया है और उसकी उपलब्धि में जो योग दिया है उसकी एक झांकी उनके निबंध संग्रह `भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र` में मिलेगी । डा० नगेन्द्र ने पाश्चात्य और भारतीय काव्य सिद्धान्तों का सूक्ष्म अध्ययन प्रस्तुत कर उनके समन्वय का मार्ग उन्मुक्त किया है । छायावाद और राष्ट्रीय जागरण के काल तक के हिंदी साहित्य का नवीन और अधिक संपूर्ण मूल्यांकन प्रस्तुत किया है और पहली बार हिंदी आलोचना में अन्य भारतीय साहित्यों के तुलनात्मक अध्ययन और पारस्पारिकता की चेतना का समावेश किया है ।

`भारतीय साहित्य की मूलभूत एकता` नामक निबंध में इस चेतना को स्वर देते हुए वे कहते हैं-`किसी की प्रवृत्ति का अध्ययन केवल एक भाषा के साहित्य तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए । वास्तव में इस प्रकार का अध्ययन अत्यन्त अपूर्ण रहेगा ।`

ये निबंध अत्यन्त उच्चकोटि की निबंधकला के प्रमाण हैं और उनका स्वरूप, उनका कलेवर, उनकी भंगिमा सब प्रतिपाद्य के अनुरूप ढली है उदाहरण के लिए `कहानी और रेखाचित्र` इस निबंध में कहानी और रेखा चित्र दो विधाएं हैं या एक ही के दो प्रकार हैं उनमें अन्तर क्या है इसका विवेचन लेखक ने गोष्ठी की कार्यवाही के अंकन के माध्यम से किया है अन्य किसी रूप में कहानी और रेखाचित्र के साम्य और भेद को इतनी सूक्ष्मता से उपस्थित करना कठिन होता है। इसके बाद डा० नगेन्द्र ने गंभीर चिंतन कर अपने `निबंध `अनुसंधान और आलोचना` में अनुसंधान का एक पूरा शास्त्र ही विकसित किया है। गंभीरता और मौलिकता की दृष्टि से यह निबंध जितना महत्वपूर्ण है उतना ही सामयिकता और उपयोगिता की दृष्टि से भी। नगेन्द्र जी का यह निबंध अनुसंधाताओं के लिए लनबूफे दीपस्तंभ का काम करता है। इस निबंध में प्रसंगवश आलोचक के सत्य रूप का जिस ओजपूर्ण स्पष्टता से आख्यान हुआ है, वह भी प्रशंसनीय है। एक आलोचक की रचनाएं होने के कारण प्रस्तुत संग्रह में लगभग सभी निबंध आलोचना साहित्य की निधि है। इनके निबंधों में जो आत्मीयता मिलती है वह अपने विषय के कारण अन्य निबंधों में नहीं मिलती। स्पष्टता, संतुलन, और निर्भीकता नगेन्द्र जी के विशिष्ट गुण हैं। डा० सत्येन्द्र अद्यतन युग के निबंधकार हैं। इनका प्रत्येक निबंध साहित्यिक अध्ययन की नवीन दृष्टि और नई कड़ी प्रस्तुत ~~कि~~ करता है। इनके साहित्यिक निबंधों की शैली निर्वैयक्तिक और वैज्ञानिक है। इनके निबंध संग्रह `कला, कल्पना और साहित्य, साहित्य की फांकी आदि हैं। `कला, कल्पना और साहित्य` में प्रधानतः उनके आलोचनात्मक निबंध ही संग्रहीत हैं। वर्तमान युग के मार्क्सवादी निबंधकारों में डा० रामविलास शर्मा अग्रगण्य हैं। `संस्कृति और साहित्य`, प्रगति और परंपरा`, `प्रगतिशील साहित्य की समस्याएं` स्वाधीनता और राष्ट्रीय साहित्य` आदि उनके निबंध संग्रह हैं। इनका विवेचन गंभीर है। भाषा, सरल, सुबोध, और जन-साधारण के लिए ग्राह्य है। विषयानुकूल और व्यंग्य इनकी भाषा में रहता है। आलोचनात्मक निबंधकारों में श्री इलाचंद जोशी प्रतिष्ठित लेखक माने जाते हैं, इनके कई निबंध संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

निबंधों में उन्होंने आधुनिक साहित्य की गतिविधियों का विश्लेषण किया है। उर्दू, अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग उन्होंने बिना किसी हिचकिचाहट से किया है। सारांशत: जोशी जी एक मननशील लेखक हैं। मनोविज्ञान की विवेचन शैली को लेकर वे निबंध सृजन कर रहे हैं। अज्ञेय जी वर्तमान युग के प्रयोगवेत्ता निबंधकार हैं। इनके निबंधों में स्थान-स्थान पर इनका व्यक्तित्व प्रकट हुआ है। भाषा पर उनका पूर्ण अधिकार है, इनकी सौष्ठवमयी भाषा शैली संस्कृत की ओर झुकी हुई है। त्रिशंकु, आत्मनेपद, संवत्सर, 'लिखि कागद कोरे' आदि सभी इनके वैयक्तिक निबंध संग्रह हैं। इनका गंभीर व्यक्तित्व इन निबंधों में प्रकट होता है। उन्होंने अपने निबंधों में आवश्यकता पड़ने पर उर्दू तथा अंगरेजी शब्दों का भी प्रयोग किया है। विषय की अपेक्षा व्यक्ति और उसकी मनोदशाएं प्रधान हो उठी हैं। रामवृक्ष बेनीपुरी जी का संस्मरणात्मक निबंधकारों में प्रमुख स्थान है। इनके निबंध यथार्थत: संस्मरण, रेखाचित्र तथा वैयक्तिकता के सुंदर उदाहरण हैं। 'माटी की मूरतें' इनके रेखाचित्रों का संग्रह है तथा 'गेहूं और गुलाब' संस्मरणों तथा प्रतीकात्मक निबंधों का संकलन है। इनके निबंधों में समाजवादी विचारधारा गृहीत हुई है। डा० गणपति चन्द्र गुप्त जी के 'साहित्यिक निबंध' पुस्तक में सैद्धांतिक, ऐतिहासिक तथा व्यावहारिक निबंधों का संग्रह हुआ है। वे आलोचनात्मक निबंध लिखने में ही प्रवृत्त रहे हैं। साहित्यिक विषयक तथा साहित्यिक व्याधियों पर ही उन्होंने अधिक लिखा है। डा० रांगेय राघव अद्यतन युग के प्रगतिवादी निबंधकारों में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। निबंधों के अतिरिक्त इन्होंने रिपोर्ताज भी लिखे हैं। इनमें कला वैभव और काव्य तत्व का समन्वय भी हुआ है। 'भारतीय चिंतन' तथा 'संगम और संघर्ष' इनके आलोचनात्मक निबंधों का संग्रह है। इनकी भाषा सरल और व्यावहारिक है। इनकी लेखनी में ओज, स्वाधीनता और बल है। श्री गोपालप्रसाद व्यास इस युग के निबंधकारों में हास्यावतार कहे जा सकते हैं। 'कुछ सच कुछ झूठा' तथा 'मैंने कहा' इनके शिष्ट साहित्यिक तथा राजनीतिक व्यंग्य विनोद से पूर्ण निबंधों के संग्रह हैं। बेढब बनारसी वैयक्तिक निबंधकार हैं। इनके निबंधों में हास्य-व्यंग्य का पुट रहता है। 'उपहार' इनके निबंधों का संग्रह है। वे बड़े मनमौजी हैं। जब इनकी इच्छा

होती है तब निबंध लिखने बैठ जाते हैं । डा० विनयमोहन शर्मा `प्रबल` निबंध आलोचक और कवि हैं । इनके आलोचनात्मक तथा साहित्यिक निबंधों में हिंदी और मराठी का पारस्परिक सम सम्बन्ध दृष्टव्य है । साहित्यावलोकन, दृष्टिकोण आदि इनके निबंध संग्रह हैं । धर्मवीर भारती के निबंध `ठेले पर हिमालय`, तथा `लाल कनेर और लालटेनवाली नाव`, सही अर्थों में मन की मुक्त भटकनें हैं, जिनमें अनेक बातें लेखक के मस्तिष्क में आती हैं और उन्हीं को वह लेखनी के द्वारा कागज पर उतारता है । `कहनी अनकहनी`, `पश्यन्ती` आदि इनके निबंध संग्रह हैं । इसमें उनके विभिन्न प्रकार के निबंध संगृहीत हैं । साहित्यिक , ऐतिहासिक, धार्मिक आदि अन्य विषय समाहित हैं । ये निबंध उनके वैयक्तिक प्रकार के अंतर्गत आते हैं । भारती जी जीवन का निस्सारता एवं समर्पण और उत्सर्ग की बात करते हैं ।

पं० विष्णुकांत शास्त्री, ललिताप्रसाद शुक्ल, लक्ष्मीचंद जैन, जगदीशचन्द्र माथुर, भगवतीशरण उपाध्याय, विवेकीराय आदि अनेक इस युग के समृद्ध निबंधकार हैं ।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि अद्यतन युग की व्यक्तिवादी या आत्मकेंद्रित मनोवृत्ति वैयक्तिक निबंधों की सर्जना में प्रवृत्त हुई । इस युग में लेखक पहले आलोचक और बाद में निबंधकार के रूप में प्रस्तुत हुए । साहित्य विषयक उत्कृष्ट आलोचनाएं लिखी गईं। गद्य शैली के अलग अलग रूप दिखाई दिए । बड़े-बड़े निबंधकारों और समीक्षकों का इस युग में प्रवेश हुआ । निबंध रचना को कला व्यापार मानकर आत्मगुंजनपरक निबंध लिखने की प्रवृत्ति बढ़ी । संक्षेप में कहें तो इस युग में निबंध रचना का प्रसार और विकास हुआ। निबंध रचने की पद्धतियां परिष्कृत और उन्नति हुईं। निबंधकारों की विचारदृष्टि व्यापक और सूक्ष्म बनी । वैयक्तिक निबंधों की रचना करने के सफल प्रयास हुए । इस विकास को देखते हुए हिन्दी निबंध साहित्य के उज्ज्वल भविष्य की ओर हम आशावान हो सकते हैं। हिन्दी निबंध का यह विकास त्वरापूर्ण और समृद्धियुक्त भी है ।

सन्दर्भ -ग्रन्थ

१- हिन्दी गद्य ~~कन-इनलिहन~~ साहित्य का इतिहास- डा० जगन्नाथप्रसाद शर्मा, पृ०२८-३१

२- हिंदी गद्य की प्रवृत्तियां- डा० विजयशंकर मल्ल, पृ० ७८

३-`संचयन` डा० रामरतन भटनागर, पृ० २

४-`हिन्दी निबंधकार`जयनाथ `नलिन`पृ० ७७

५- हिंदी साहित्य में निबंध- प्रा० ब्रह्मदत्त शर्मा, पृ० ३६

६- हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास- डा० गणपतिचन्द्र गुप्त, पृ०४०-४१

७- आधुनिक हिन्दी साहित्य-डा० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, पृ०१३३

८- आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास-डा० कृष्णलाल , पृ०३४८

६- भट्ट निबंधमाला-भाग२, धनंजय भट्ट`सरल`, पृ०३

१०- हिंदी साहित्य कोश, भाग-१- धीरेन्द्र वर्मा, पृ० ४१०

११- भारतेन्दुयुगीन निबंध-शिवनाथ, पृ०२६-३३

१२- हिन्दी गद्य के विविध साहित्य रूपों का विकास-डा० बलवंत लक्ष्मण कोतमिरे- पृ० २५५

१३- हिंदी साहित्य चिंतन- इन्द्रपाल सिंह `इन्द्र` पृ० ३०२

१४- प्रेमघन साहित्य(भूमिका) श्री प्रभाकरेश्वर उपाध्याय, पृ० १६

--